धर्मे ते धीयतां बुद्धिः

मनस्ते महदस्तु च

सनातन संवर्धिनी

संस्थापक

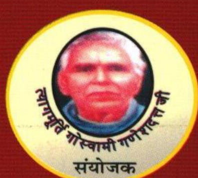
संयोजक

छठा वर्ष – प्रथम अंक

जून – 2020

याद किए गए त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज

61वीं पुण्यतिथि पर 10 जून 2020 को इस वर्ष करोना महामारी की वजह से उनकी कर्म स्थली सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में सरकारी प्रतिबन्धों के कारण सामूहिक प्रार्थना की जगह भिन्न-भिन्न स्थानों पर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

Samadhi Sthal Saptrishi Ashram Haridwar

Saptrishi Ashram Haridwar

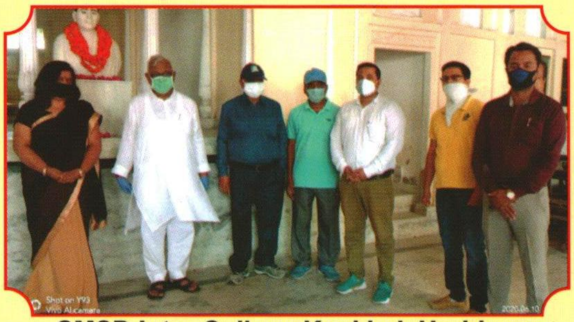
SMSD Inter College Kankhal, Haridwar

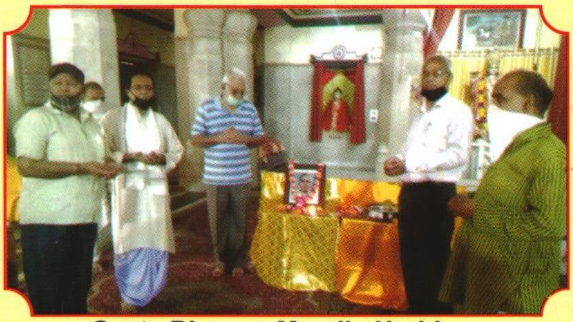
Geeta Bhawan Mandir, Haridwar

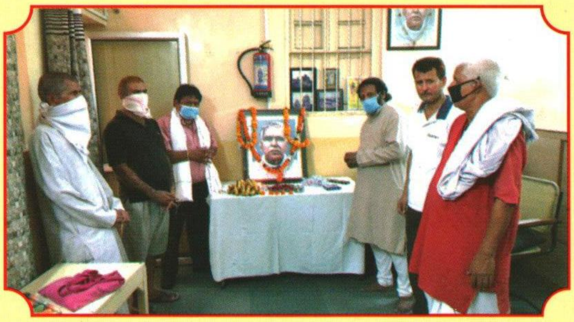
Bhupindra Bhawan, Paharganj, New Delhi

Sanatan Dharma College (Lahore), Ambala Cantt

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी०) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र : दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर)

मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011.23586251, 23584016

शाखा कार्यालय-1 : सप्तऋषि आश्रम, सप्तसरोवर मार्ग, हरिद्वार, दूरभाष- 01334-261702

शाखा कार्यालय-2 : गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर 19-ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष : 0172-2543283

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मंडल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. आर. पी. विज

याद किए गए त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज
10 जून 2020

Goswami Ganesh Dutt Sanatan Dharma College Hariana (Hoshiarpur)

Goswami Ganesh Dutt Sanatan Dharma College, Palwal

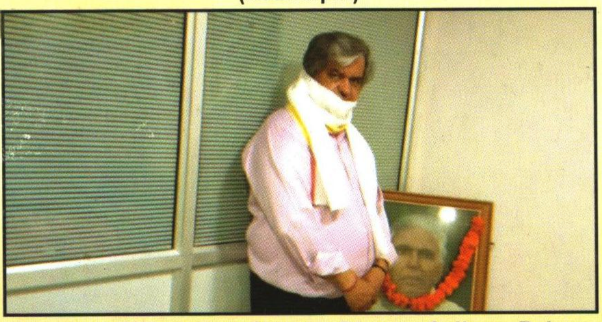

Goswami Ganesh Dutt Sanatan Dharma College, Rajpur (Palampur)

Shri Sanatan Dharma Panchmukhi Hanuman Mandir, Goswami Ganesh Dutt Bhawan Sector 19.A Chandigarh

SD Phullarwan Girls Sr Sec School Jalandhar

HSD Girls Sr. Sec. School, Gurdaspur

कोरोना का अमोघ उपचारः सनातनी जीवन शैली

आज कोरोना नामक वायरस से उत्पन्न भयानक महामारी से समूचा विश्व आक्रांत है। षड्यंत्र कारी चीन के बुहान शहर से उत्पन्न हुए कोरोना वायरस की चपेट में लगभग पूरा विश्व आ गया है।। अमेरिका, यूके, इटली, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया जैसे उच्च चिकित्सा सुविधाओं से संपन्न देशों में भी इस महामारी का अभी तक कोई कारगर उपचार संभव नहीं हुआ है। आज कोरोना संक्रमितों की संख्या डेढ़ करोड़ के करीब पहुँच चुकी है । मृतकों की संख्या भी सात लाख के आसपास हो गई है। इन आंकड़ों पर कब विराम लगेगा कुछ कहा नहीं जा सकता। हमारे देश में भी संक्रमितों की संख्या पन्द्रह लाख से ऊपर और मृतकों की संख्या 35000 के लगभग हो चुकी है जो नितांत चिंता का विषय है।

कोरोना नामक वायरस की उत्पत्ति चीन के बुहान शहर के मांस मछली बाजार से हुई है। यह बाजार बहुत ही अशुद्ध , अपवित्र और गंदगी भरा है। मांसाहारी चीनी नागरिक सर्वभक्षी हैं। वे स्थूलकाय जीवों से लेकर सांप, बिच्छू , केंचुए, कॉकरोच और चमगादड़ आदि तक सभी जीवों को बड़ी निर्ममता से खा जाते हैं। उनकी दृष्टि और संस्कृति में कुछ भी अभक्ष्य नहीं है। यद्यपि विश्व में अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। पर उनके मांसाहार और चीन के मांसाहार में बहुत अंतर है। चीनी नागरिक स्वच्छता से कोसों दूर है। उनके मांसाहार की प्रवृत्ति बहुत ही घृणित और जुगुप्सित है। इसी कारण वहां कोरोना वायरस और इस जैसे अनेक अन्य वायरस उत्पन्न हुए हैं जिन्होंने समूचे विश्व को अपने जाल में लपेट लिया है।

विश्व के विख्यात चिकित्सकों का मानना है कि इस कोरोना नामक भयानक बीमारी से बचने का एकमात्र उपाय वर्तमान में अपनाई गई अनियंत्रित और अतिभौतिक भोगवादी जीवन शैली को बदलना है। आज यह चिकित्सक जिस प्रकार की जीवन शैली को अपनाने के लिए सलाह दे रहे हैं वह जीवन शैली पूरी तरह से हमारे सनातन धर्म की चिरंतन जीवन शैली से पूरी तरह से मेल खाती है। इससे हम सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हमारे पूर्वजों ने जो सादगी पूर्ण और परोपकारी जीवन शैली हमें दी है वह वास्तव में आज समूचे विश्व का मार्गदर्शन और संरक्षण करने में समर्थ है। यहाँ हम सनातनी जीवन शैली के कुछ अनुकरणीय महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालेंगे।

सनातनी संस्कृति इतनी महान संस्कृति है कि यह मानववाद से ऊपर उठ कर प्राणिवाद में विश्वास रखती है। उसका हिंसा और मांसाहार में तनिक भी विश्वास नहीं है। मांसाहार के लिए व्यक्ति निरीह प्राणियों की हत्या करता है जो निन्दनीय है। भक्ष्य और अभक्ष्य का निर्धारण करते हुए सनातन धर्म ने शाकाहार को भक्ष्य कहा है और मांसाहार का निषेध करते हुए एक प्रकार से सृष्टि के समस्त प्राणियों को अभयदान दिया है। वेद का उद्घोष है--मा हिंस्यात् सर्वा भूतानि। अर्थात् सृष्टि में किसी भी प्राणी की हत्या नहीं होनी चाहिए। शास्त्रों की दृष्टि में अहिंसा ही सच्चा धर्म है-अहिंसा परमो धर्मः । सनातन संस्कृति का मूल आधार है कि हमारे जीवन-यापन के लिए जितने भी आवश्यक संसाधन हैं उनका प्रयोग एक सीमा तक इस रूप में होना चाहिए कि वे अन्य किसी प्राणी के सहज जीवन-यापन में बाधक बन कर उपस्थित न हों। आधुनिक दृष्टि में इसे **जिओ और जीने** दो का सिद्धांत कहते हैं। सनातन धर्म में यह **सर्वेषां अविरोधेन जीवन यापनम्** के शाश्वत सिद्धांत के रूप में सदा से व्याख्यायित होता आया है। जड़ प्रकृति के प्रति भी सनातन धर्म एवं संस्कृति गहरी संवेदना रखती है। इनका विश्वास है कि जड़ जगत में भी चेतनता है। अन्तर केवल यही है कि वहाँ चेतनता व्यक्त न होकर अव्यक्त अवस्था में है। यही कारण है कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि मातृसमा प्रकृति के कोमल आंचल की शीतल छत्रछाया में पले-बड़े हुए हैं। उन्होंने प्रकृति को और प्रकृति ने उन्हें संरक्षण और संवर्धन दिया है। हमारी संस्कृति में प्रकृति और मानव

का अन्त: सम्बन्ध माँ और बेटे जैसा है। जैसे सुकुमार शिशु माँ का दूध पीता है और तृप्त हो जाने पर स्वत: ही स्तन छोड़ देता है वैसे ही माँ प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करते हुए और उसके मूल स्वरूप व स्वभाव को क्षतिग्रस्त न करते हुए मानव-जीवन के भरण -पोषण के लिए आवश्यक और वांछित प्राकृतिक उत्पादों को एक सीमा तक सहज रूप में ग्रहण करना सनातन धर्म का जीवन ध्येय है। यही कारण है कि औद्योगिक विकास के नाम पर प्रकृति का अनावश्यक व निर्बाध दोहन और शोषण सनातन धर्म को कभी भी स्वीकार्य नहीं रहा है। इस रूप में प्रकृति का सतत् उत्पीड़न समग्र मानव जाति के लिए विध्वंसकारी होगा जो वर्तमान में हमें दिखाई दे रहा है।

अभी तक कोई भी चिकित्सा पद्धति कोरोना का आंशिक उपचार भी नहीं ढूंढ पाई है। भारत के साथ-साथ अमेरिका, यूके जैसे अनेक विकासशील देश इस बीमारी के वैक्सीन निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ कर चुके हैं, पर अभी तक इसके वैक्सीन की शोध-प्रक्रिया का प्रथम व द्वितीय चरण ही पूरा हो पाया है । वैक्सीन बनने में कम से कम नवंबर तक का समय लग सकता है । अत: किसी कारगर दवाई और वैक्सीन के अभाव में कोरोना से बचने का एकमात्र साधन है— मानव के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का अधिक से अधिक मात्रा में होना। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की शब्दावली में इसे ही **इम्यूनिटी** कहा गया है। आज प्रत्येक डाक्टर कोरोना के मरीजों को और अन्य लोगों को अपनी इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए जोर दे रहे हैं। हमारे आयुर्वेद में इस इम्यूनिटी अर्थात् रोग प्रतिरोधक क्षमता का बड़े विस्तार से उल्लेख हुआ है। आयुर्वेद में दिन प्रतिदिन के खानपान में ऐसी शुद्ध, सात्त्विक और पौष्टिक खाद्य सामग्री को अधिमान दिया गया है जिससे आम आदमी की इम्यूनिटी में स्थायी रूप से वृद्धि हो और वह कोरोना जैसी भयंकर व संक्रामक बीमारियों को अपनी रोग प्रतिरोधक शक्ति के आधार पर ही पराजित कर दे।

सनातन धर्म ने मानव -जीवन के प्रत्येक आचार-व्यवहार की एक सीमा निर्धारित की हुई है। इसका सिद्धांत है कि निर्धारित सीमा का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए--अति सर्वत्र वर्जयेत्। यह सिद्धांत भोजन पर भी लागू होता है। भोजन न बहुत गरम हो और न बहुत ठंडा हो, वह बहुत अधिक तीखा और मसालेदार भी नहीं होना चाहिए। भोजन स्वादिष्ट और रसीला होना चाहिए। खाने में दालें, हरी सब्जियां, शुद्ध तेल, घी, दही और लस्सी आदि का यथासंभव प्रयोग किया जाना चाहिए। ऐसा आहार ही शुद्ध, सात्त्विक व संतुलित आहार कहलाता है जो खाने वाले की **इम्यूनिटी** को निरन्तर बढाता है। इस संदर्भ में एक सनातन धर्मी की रसोई का उल्लेख करना भी बड़ा प्रासंगिक होगा । हमारा रसोईघर एक प्रकार से सहज औषधालय है जिसमें एक से बढ़कर एक मानव की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाने वाली अनेक औषधियां और वनस्पतियां विद्यमान हैं जैसे हींग, जीरा, धनिया , हल्दी , दालचीनी, लौंग , इलायची , काली मिर्च, अजवाइन , सौंठ, मुलेठी और अदरक आदि। इन सबके अतिरिक्त तुलसी दल, पुदीना, नीम्बू और शहद आदि का यथा समय प्रयोग और भी अधिक लाभकारी होता है। सनातनी संस्कृति में जूठे, बासी, जले हुए और माँस-मछली वाले भोजन को निकृष्ट और अधम श्रेणी का कहा गया है। ऐसा भोजन खाने वाले व्यक्ति ऊपर से बलिष्ठ दिखाई देते हैं पर वे असाध्य रोगों का जल्दी शिकार बनते हैं।

भोजन सामग्री के निर्धारण के साथ साथ भोजन करने के ढंग के विषय में भी हमारी संस्कृति में अनेक मानदंड निर्धारित किए गए हैं। भोजन पालथी मारकर बैठकर और मौन रहकर करना चाहिए। बात-चीत करते हुए, खड़े होकर या चलते फिरते भोजन करना निषिद्ध है। इस निषेध का वैज्ञानिक आधार है। हमारे शरीर में भोजन नलिका और श्वास नलिका बिल्कुल सटी हुई हैं। वास्तव में ऊपर से एक ही नली आगे चलकर कण्ठ से थोड़ा नीचे अभिकाकल के पास दो भागों में बँट जाती है। एक नली भोजन नली कहलाती है और दूसरी श्वास नली । यह श्वास नली ही फेफड़ों तक ऑक्सीजन पहुँचाती है। इस

श्वास नली में ही स्वर यंत्र हैं और इसके अनेक अंग है। इसके मुख पर एक आवरण अर्थात ढक्कन होता है। जब हम भोजन को चबाकर गुटकते हैं तो उस समय श्वास नलिका के मुख को यह आवरण ढक लेता है और खाना भोजन नली के माध्यम से सीधे पेट में चला जाता है। यदि हम खाना खाते समय बातचीत करेंगे तो बातचीत में स्वर यंत्र का और श्वास नलिका का खुला रहना जरूरी होता है। भोजन और बात एक साथ करते समय भोजन के किसी कण का श्वास नलिका में जाने का डर बना रहता है और यदि भोजन का जरा सा अंश भी श्वास नली में चला जाए तो इससे व्यक्ति का श्वसन तंत्र गड़बड़ा जाता है । उसे अजीब तरह की धसक और खाँसी होती है और बार बार कोशिश करने पर भी यदि भोजन का अंश बाहर न आए तो इससे व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है । अतः खाना खाते समय बोलना नहीं चाहिए । इसलिए हमारे शास्त्रों में मौन रहकर भोजन करने का आदेश दिया है।

हमारे शास्त्रों ने भोजन पकाने वाले और खाने वाले दोनों के लिए कुछ नियम निर्धारित किए हैं। भोजन बनाने वाले को बहुत ही शुद्ध और पवित्र होना चाहिए, मन से भी और तन से भी। हमारे यहाँ रसोईघर में जाने से पहले स्नान का विधान है। इसलिए आदर्श गृहिणी नित्य कर्म से निवृत्त हो स्नान करने के बाद ही खाना पकाने की लिए पाकशाला में प्रवेश करती हैं। यह हमारी सनातन परम्परा है जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है।इसे पूर्ण मनोयोग से अपनाना जरूरी है। इसके साथ ही खाना खाने वाले के लिए भी यह निर्धारित किया गया है कि जब भी खाना खाया जाए, हाथ, पाँव और मुंह को धोकर खाया जाए जैसा कि सुश्रुत संहिता में कहा गया है– **नाप्रक्षालित पाणिपादौ भुंजीत।** एक अन्य स्थल पर भी भोजन करते समय हाथ, पाँव और मुंह धोने का स्पष्ट निर्देश है **हस्तपादे मुखे चैव पंचार्द्रे भोजनं चरेत्।** अर्थात भोजन करने से पहले अच्छी तरह से हाथ ,पाँव और मुख को साफ कर लेना चाहिए। आज कोरोना काल में हाथों को बार बार सेनेटाइज करने को कहा जा रहा है। घर में प्रवेश करते समय जूतों को बाहर रखने की सलाह है , मुख पर मास्क लगाने का आदेश है। हम गर्व से कह सकते हैं कि ऐसे सभी आचरण हमारी सनातन संस्कृति की जीवन शैली के सहज अंग रहे हैं। हमारे रसोईघर में जूते चप्पल ले जाना निषिद्ध है। सर्दियों में केवल खडाऊं का प्रयोग किया जा सकता है।

हमारी अतिथि-पूजन परम्परा भी बहुत वैज्ञानिक रही है जिसे हमने आधुनिकता के नाम पर त्याग दिया है। पहले घर पर कोई मेहमान आता था तो सबसे पहले घर के मुख्य द्वार पर उसके हाथ -पाँव धोए या धुलवाए जाते थे। उसे पाँवों के लिए पाद्य, हाथों के लिए अर्घ्य और मुख के लिए आचमन अर्थात् पीने के लिए पानी दिया जाता था। इसके बाद ही अतिथि का घर में प्रवेश होता था। हाथ-पाँव धोने का प्रचलन मन्दिरों और गुरुद्वारों में प्रवेश के समय भी लागू होता है। बहुत से देवस्थानों में प्रवेश द्वार से पहले पाँच-सात फुट की पानी की होदी में से गुजर कर ही अर्थात् सहज रूप में पाँव धो कर ही भक्तजन प्रवेश कर सकते हैं।

कोविड-19 वायरस के संक्रमण काल में आजकल क्वारंटाइन पर बहुत जोर दिया जा रहा है।इस प्रक्रिया में कोरोना के संक्रमितों और संदिग्ध संक्रमितों को बाकी समाज से बिल्कुल अलग कर दिया जाता है। इससे इस संक्रमण के प्रसार पर रोक लग जाती है। आज क्वारेंटाइन के माध्यम से हम जो वातावरण तैयार करते हैं ऐसा वातावरण हमारी संस्कृति में बहुत पहले से **सूतक** और **पातक** की विशिष्ट स्थितियों में सामान्य से सामान्य घरों में बनता आया है। घर में किसी बच्चे का जन्म होता है तो दस-बारह दिन के लिए सूतक लग जाता है। सूतक का अर्थ है—जन्म लेने की प्रक्रिया में उत्पन्न हुई अशुद्धियों से

दूषित हुआ वातावरण और इस दूषित वातावरण के उपचार के उपाय। नवजात शिशु को इस संसार के वातावरण में या घर और बाहर के परिवेश में ढलने के लिए कुछ समय की आवश्यकता होती है। अत: इस दस-बारह दिन के सूतक समय में जच्चा -बच्चा के पास आम आदमी का प्रवेश वर्जित होता है। कोई भी व्यक्ति बिना एहतियात के सूतिका गृह में प्रवेश नहीं कर सकता, बच्चे को अपने हाथों में नहीं ले सकता। इसके लिए कुछ विशेष सावधानियां आम घरों में निर्धारित की गई हैं जिन्हें हम परिवार के रीति-रिवाज कहते हैं। इसके साथ ही जब सूतक काल समाप्त भी हो जाता है तो उसके बाद भी बच्चे को घर से बाहर नहीं ले जाते। लगभग सवा महीने बाद शिशु को भगवान सूर्य के दर्शन करवाए जाते हैं। बच्चे को मिलने के लिए आने वाले अतिथियों को पहले घर के किसी दूसरे कमरे में बैठाया जाता है और कुछ समय बाद उसे बच्चे वाले कमरे में जाने की अनुमति होती है। यह एक प्रकार से बच्चे को बाहरी वातावरण में विद्यमान विभिन्न प्रकार के प्राणघातक वायरसों से बचाने के लिए किया जाता है। इसे हम हमारे सनातन धर्म का पारम्परिक क्वारंटीन कह सकते हैं।

ऐसी ही स्थिति पातक के समय होती है। किसी आत्मीय जन की मृत्यु पर उसके घर-परिवार और कुल-गोत्र को पातक लगता है। पातक में भी अनेक प्रकार के घातक कीटाणु घर के परिवेश में जन्म ले लेते हैं। उन्हें नियन्त्रित और निर्बल करने के लिए मृतक शरीर के चारों ओर हल्दी का घेरा बनाते हैं, धूप और दीप जला देते हैं। दाह संस्कार करने से पहले शव को विधिवत स्नान कराया जाता है ,उसके द्वारा पहने गए कपड़ों और बिस्तर को त्याग दिया जाता है। जब अंत्येष्टि संस्कार के लिए उसे रामबाग या श्मशान भूमि ले जाया जाता है तो पीछे से उस परिवार की पुत्रियां पूरे घर को पानी से धोकर शुद्ध करती हैं। संस्कार करने वाला व्यक्ति स्नान करता है। उसके द्वारा और भी शुद्धिकरण के लिए अनेक प्रकार के उपांग कर्म किए जाते हैं। दाह संस्कार के समय शव के साथ हवन सामग्री और शुद्ध घी की आहुतियां दी जाती है। इस हवन प्रक्रिया से उत्पन्न हुए धूएँ से शवदाहजन्य अनेक घातक विषाणु दम घुट कर मर जाते हैं और वातावरण में शुद्धि का संचार होता है। शास्त्र का विधान है कि जो भी व्यक्ति शव यात्रा में शामिल हुआ हो उसे अपनी शुद्धि के लिए अवश्य स्नान करना चाहिए। स्नान करने से ही व्यक्ति और उसके वस्त्र शुद्ध होंगे। विष्णु स्मृति का स्पष्ट कथन है – **चिताधूमसेवने सर्वे वर्णाः स्नानमाचरेयुः**। अर्थात् जो भी व्यक्ति चिता के धुएं के संपर्क में या शव के संपर्क में आया हो उसे स्नान अवश्य करना चाहिए। इसके साथ ही एक व्यवस्था और भी है कि जब भी व्यक्ति को उल्टियां लगे या वह क्षौरकर्म करवाए उसके बाद भी स्नान करना बहुत आवश्यक है। तभी बालों के छोटे-छोटे अंश शरीर से अलग हटेंगे। इस प्रकार स्पष्ट है कि आज जिस क्वारेंटाइन पद्धति का प्रयोग चिकित्सा जगत के निर्देश से हो रहा है वह सनातन धर्म में हजारों वर्षो से समय-समय पर अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों में सदा से अपनाया जाता रहा है। इस अति सूक्ष्म वैज्ञानिक उपचार को हमारे महर्षियों ने सनातन धर्म का अपरिहार्य अंग बना दिया है, इसके प्रति हर एक व्यक्ति के हृदय में श्रद्धा और आस्था का भाव जगा दिया है । इस कारण कोई भी व्यक्ति इस सूतक और पातक में बताई गई छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी सावधानी को सहज रूप में निभाता है। ऐसा अतिसूक्ष्म और अतिगहन वैज्ञानिक आधार हमारी साँस्कृतिक जीवन शैली का है जिस पर प्रत्येक सनातन धर्मी को गर्व होना चाहिए।

सनातन धर्म में मानव के लिए जो दिनचर्या निर्धारित की गई है वह पूरी तरह से वैज्ञानिक है। यह दिनचर्या मानव के शरीर ,मन और आत्मा के पूर्ण विकास के लिए पूरी तरह से उपयोगी है। प्रातः उठकर शौच कर्म से निवृत हो, नीम या कीकर की दातुन से दांत, जीभ और पूरे मुख के अन्दरूनी भाग की

सफाई, स्नान करना और उसके बाद थोड़ी देर के लिए धूप- दीप जलाकर पूजा -पाठ करना, यह सनातन धर्मी जीवन- पद्धति की सामान्य दिनचर्या है। शुद्ध घी का दीपक और कपूर या गूगलधूप आदि के जलाने से पूरे घर में विषाणु मुक्त वातावरण हो जाता है। इससे परिसर की शुद्धि के साथ आध्यात्मिक लाभ अलग से प्राप्त होता है। हमारे धर्म में योग और यज्ञ इन दोनों का बहुत महत्व है। आज समूचा विश्व महर्षि पतंजलि के योग की अद्‌भुत और अद्वितीय शक्ति का प्रत्यक्ष द्रष्टा व भोक्ता बन कर इसकी अपार महिमा को स्वीकार कर चुका है। योग के आठ अंगों में चौथा अंग प्राणायाम है। आसन की सिद्धि हो जाने पर श्वास और प्रश्वास की सहज गति को रोक कर उनको और अधिक कालिक विस्तार देना प्राणायाम कहलाता है। तस्मिन् सति श्वास प्रश्वासयोः गतिविच्छेदः प्राणायामः ।प्राणायाम के अनेक प्रकार हैं --कपालभाति ,अनुलोम- विलोम, भस्त्रिका और भ्रामरी आदि। प्रतिदिन के योगाभ्यास से व्यक्ति की रोगप्रतिरोधक क्षमता निरन्तर बढ़ती जाती है। मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मानसिक तनाव, क्लोटिंग, कब्ज आदि भयंकर बीमारियों के उपचार में योग और प्राणायाम बहुत अधिक उपयोगी प्रमाणित हुए हैं।

सनातन धर्म की सदाबहार और सादगी पूर्ण जीवन शैली के जिन महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट किया गया है उन सबको भगवान कृष्ण ने गीता के छठे अध्याय के निम्न श्लोक बड़े व्यावहारिक रूप से निबद्ध किया है। उन्होंने मानव के समस्त जीवन को और उसके विविध दैनिक व्यवहारों को योग का नाम दिया है। यह योग अंतर्मुखी होने के साथ-साथ बहिर्मुखी भी है । श्लोक इस प्रकार है-

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु:खहा ।।

अर्थात् यथा योग्य आहार-विहार करने वाला, अपने नित्य प्रति के कर्मो के सफल निर्वाह में यथा योग्य चेष्टाअर्थात् प्रयत्न करने वाला और सर्वदा यथा योग्य सही समय पर सोने तथा ज़ागने वाला व्यक्ति, एक प्रकार से व्यावहारिक स्तर पर योग का आचरण करने वाला होता है। इस प्रकार का योग व्यक्ति के समस्त आन्तरिक और बाहरी कष्टों को, समस्त आधि-व्याधियों को हरने वाला होता है। इस श्लोक में सामान्य व्यक्ति के जीवन व्यवहार के विविध पक्षों को उजागर किया गया है। व्यक्ति का आहार यानि खान-पान सन्तुलित होना चाहिए। आज के आहार विशेषज्ञ ज्यादातर बैलेंस डाइट की बात करते हैं। पर गीता की दृष्टि में सन्तुलित आहार का अर्थ कहीं अधिक व्यापक है। यह केवल क्या खाना है, तक सीमित नहीं है। बल्कि इसके अन्तर्गत कब खाना है, कितना खाना है और कैसे खाना है आदि खान-पान से सम्बन्धित सभी जिज्ञासाएं आ जाती हैं। आज हमारी खान-पान की व्यवस्था पूरी तरह से गढ़बड़ाई है। हम बेसमय पर बेढंग खाने के शिकार हो गए हैं। यदि सुबह, दोपहर और रात को संतुलित व पुष्टि वर्धक भोजन सही समय पर और सही मात्रा में अर्थात् न बहुत ज्यादा और न बहुत कम , और सही तरीके से खाया जाए तो ऐसी आहार प्रक्रिया भोक्ता के शरीर को हृष्टपुष्ट बनाती और उसकी रोग प्रतिरोधक शक्ति निरन्तर बने रहेगी। विहार का अर्थ भी केवल सैर-सपाटा नहीं है। इसमें सुबह से सायंकाल तक के नित्य कर्म के समस्त कार्य व्यापार आ जाते हैं। इस श्लोक का तीसरा बिन्दु वैयक्तिक के साथ-साथ सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमें घर परिवार, समाज या सरकार अथवा कार्यालय द्वारा जो भी कार्य सौंपा गया है उस कार्य को निष्ठापूर्वक और सही समय पर सम्पन्न करना चाहिए। अनेक बहाने बना कर आज का काम कल पर छोड़ने वाले कामचोरों की देश में भरमार है। यदि हम अपने काम का निपटारा सही समय पर नहीं करेंगे तो इससे काम का बोझ बढ़ने से व्यक्ति मानसिक तनाव से ग्रस्त हो जाता

है। अत: गीता का स्पष्ट कथन है कि हमें **काम ही पूजा है** के सिद्धात को अपनाते हुए अपने सभी कार्यो को सही समय पर निष्पादित करना चाहिए। आज आम आदमी के रात को सोने और सुबह जागने का ढ़ंग भी बड़ा बेहूदा है। कोरपोरेट सेक्टर में काम करने वाले युवाओं की अपनी कुछ कार्यालय सम्बन्धित विवशताएँ हो सकती हैं। पर विडम्बना तो यह है कि दूसरे लोग भी ठीक समय पर सोने और ठीक समय पर उठने के बारे में बेपरवाह हैं। यही आज के मानव की मानसिक खिन्नता और अवसाद का भी कारण है। अग्रेंजी में कहावत है- Early to bed early to rise makes the man healthy, wealthy and wise-वास्तव में यदि व्यक्ति पहले तीन उपाय अर्थात् आहार, विहार और अपने कर्त्तव्य का निर्वहन सही रूप में करेगा तो उसे रात को अच्छी गहरी मीठी नींद आएगी, दिन भर की सारी थकान मिट जाएगी। अगले दिन प्रात:काल सही समय पर उठकर नई ऊर्जा और स्फूर्ति के साथ मानव पुन: अपने जीवन व्यवहार में संलिप्त हो जाएगा।

हमारे वैदिक ऋषियों का चिन्तन बहुत ही गहन, सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक रहा है। उन्हें जीवाणुओं के सुप्रभावों और विषाणुओं के कुप्रभावों के विषय में पूरा ज्ञान था।विषाणुओं का संक्रमण कैसे रोका जाए। इसके लिए उन्होंने कुछ सामाजिक नियम बनाए और उनका कड़ाई से पालन कराने के लिए उन नियमों को धर्म संहिता के साथ जोड़ दिया। सूतक और पातक के समय अपनाई जाने वाली सावधानियां इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। वातावरण में फैले विषाणुओं को नष्ट करने के लिए सनातन धर्म ने यज्ञीय संस्कृति का विस्तार किया। वैयक्तिक स्तर पर इम्यूनिटी बढाने के लिए आयुर्वेद के माध्यम से पौष्टिक और संतुलित आहार पर बल दिया और मांसाहार की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया। क्योंकि मांसाहार ही अनेक प्रकार के विषाणुओं का जनक है।कर्म इन्द्रियों और ज्ञान इन्द्रियों से विषाणुओं का संक्रमण तीव्र गति से फैलता है। इसलिए हमारे सनातन धर्म में व्यर्थ में इन्द्रियों के स्पर्श को वर्जित माना गया है। मनुस्मृति के चतुर्थ अध्याय में इसका स्पष्ट उल्लेख है। अनातुरः स्वानि खानि न स्पृशेदनिमित्ततः। इसी कारण सनातन धर्म में हाथ मिलाने के स्थान पर नमस्ते को अभिवादन का सशक्त माध्यम बनाया और आज समूचा विश्व हमारे अभिवादन की इस विलक्षण और निरापद शैली का अनुकरण कर रहा है।

सेवाव्रती एवं तपोधर्मी ऋषियों द्वारा प्रणीत यह महान सनातन संस्कृति सर्वतोभावेन मानव कल्याण को समर्पित है। इस संस्कृति का चिन्तन और जीवन दर्शन बहुत ही व्यापक, विराट और गहन है जो सामान्य व्यक्ति की जीवन शैली में ,जीवन के विविध व्यवहारों में साकार हो रहा है।कोरोना वायरस के इस भयावह संकट काल में समूचा विश्व इस चिरन्तन संस्कृति की सर्वोच्चता, सर्वश्रेष्ठता और सर्व ग्राह्यता को स्वीकार कर रहा है क्योंकि इस संस्कृति में समस्त विश्व के कल्याण का उद्घोष निहित है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत् ।

डॉ. नन्द किशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

PATRIOT AND KARMA YOGI

Late Sh. P.L. Anand
Former Principal S.D. College, Ambala Cantt &
Panjab University Evening College, Chandigarh
Published on Nov. 1, 1987 in The Tribune on the occasion of
Tyagmurti Goswami Ganesh Dutt ji's Birth Centenary Celebrations

One has just to recall that the cries and clamours that a baby yells out at the time he is born," said a maharishi, "to realise that he perhaps is the only one to bewail the occasion amidst a crowd that only skips and merrily laughs." "He alone," the mahatma added, "will be said to have lived well, who leaves his mortal remains with a smile, while the others continue to lament for him in silence and sorrow and remember him with affection and gratitude."

Such was the illustrious Goswami Ganesh Dutt, preparations for whose centenary celebrations will commence on November 2, this year; and will continue with gaiety and gusto throughout the Sanatanist world for full one year. He epitomised in his person that spirit of service and supreme detachment which is enjoined by our scriptural wisdom and lends beauty and grace to living.

Born at Chiniot in Jhang district and educated at the Oriental College in Lahore (now in Pakisthan), The Tyagmurti (as he came to be popularly called in later years) was fascinated by the sant parampara and its ascetic virtues in his formative years and felt extremely inspired by the "Advaita philosophy" of Swami Ram Tirath as he grew old. The S.D. Pratinidhi Sabha, Punjab, was formed in 1922 and he joined it as its General Secretary to take up the challenging task of organising the Sanatanist opinion in the region which included what constitutes today, large parts of Pakistan and Jammu and Kashmir, the States of Punjab, Haryana and Himachal the Union Territories of Delhi and Chandigarh and sizeable parts of Uttar Pradesh and Rajasthan.

SANATAN DHARMA

His single-minded and relentless devotion to the propagation of cultural revivalism was acclaimed all over the area and he soon came to be regarded as the top leader of the Sanatan Dharma. The late Mahamana, Pt Madan Mohanji Malviya, virtually proclaimed him his successor in the country when he conferred on him the coveted deeksha (investiture) he ever did on any other individual in his life. He decided from that time onwards, to dedicate himself to the service of his country and countrymen and therefore renounced his home and belongings. He became a tyagmurti

missionary for the resurgence of the Sanatan Dharma, particularly its humanistic core and secular temper.

Goswami Ganesh Dutt ji was virtually the karma yogi who interpreted the Sanatan Dharma as religion harnessed to the service of man and God; and as movement directed to the attainment of individual and national self-consciousness. Deeply steeped in the tenets of Advaita that he was not the corporeal being of flesh and blood but an integral part of that sublime, subtle and sentient reality called the 'Atman', he inspired his adherents and disciples to establish institutions designed to promote the virtues of charity, truth, amity and ahimsa and succeeded in setting up a network of S.D. sabhas, schools and colleges, Mahavir Dals and shakti dals and numerous other institutions of social welfare like gaushalas, dharmashalas, aushdalyas, anathalyas and ashramas and sewa samitis of various descriptions all over the North and North Western India.

HUMAN RIGHTS

Goswamiji came out openly in support of Gandhiji when the latter started his campaign for the abolition of untouchability; and it was mainly at his instance and through his persuasive endeavours that the historic maha sammelan organised by the All India Sanatan Dharma Maha Sabha under the presidentship of Pt. Madan Mohanji Malviya passed the famous resolution permitting Harijans to recite the Shivmantra, which effected a stupendous but a silent revolution in the social and eclectic thinking of the Sanatan Dharma. His views on shuddhi and conversions were in no way less pronounced. He restored thousands of Scheduled Castes/ Scheduled Tribes who had forsaken their ancestral faith to their original fold, without any mental reservations.

And similarly he refused to give shelter to elements that encouraged communal, sectional and linguistic difference and sincerely felt that Hindus and Sikhs were the two faces of the same coin bound inextricably together by ties of consanguinity and common heritage. Nothing could separate them from each other and he, therefore, insisted that S.D. schools and institutions give lead in providing for the teaching of both Hindi and Punjabi and in equating the Japji and the Guru Granth Sahib with Shreemad Bhagwad Gita and the Ramayana as instruments for mental and moral hygiene.

He started a number of newspapers - the Bhisham, the Vir Bharat and the Vishwa Bandhu - to serve as vehicles for spreading his ideas and ideologies. Thus he made a commendable contribution to our national and cultural awakening.

SOCIAL WELFARE

Goswamiji was adept in the art of involving others in his scheme of social welfare and would spare neither the rich without making them part with their money nor the poor without securing their physical participation (shram daan) in assuring their success. He unhesitatingly associated himself with all such tasks of social amelioration where he found the alien bureaucracy either lukewarm or indifferent; and there was hardly an occasion when he felt despaired on account of financial constraints. He jumped headlong with relief and succour on the occasion of Quetta and Bihar eathquakes; and was highly acclaimed when during the Great Famine in Bengal, he sent bands of volunteers of his Mahabir Dals with food, clothing and medicines worth several thousand rupees to be distributed in the worst hit areas.

Similarly, he gave unstinted support to our freedom fighters and saw to it that there was enough money with the Sabha, particularly, during the Quit India Movement of 1942, to be distributed among the families of workers of the congress and its allied organisations who were either detained in prisons or had gone underground. He came to be popularly known as a shahi faqir (royal mendicant) who collected crores of rupees and yet remained completely detached.

SEVERE JOLT

The partition of the country in 1947, however, gave a severe jolt to his work. Most of the 1,600 institutions of various descriptions he had helped to establish were displaced and immovable property worth several crores of rupees was lost. His advancing years did not, however, deter him from putting in hard work, and he applied himself heart and soul of their rehabilitation. He gave his full support to the national Government in its work of providing relief and succour to the displaced persons and re-settling them. They were in distress and came to him in large numbers for sympathy and support, which he gave them in rich abundance. He would listen to their tales of woe, comfort them with soothing words and send them back only after inspiring them with a will to survive, energy to struggle and determination to succeed; and thus carved out a permanent place in their hearts. NO wonder that he was adorned and admired by the rich and the poor alike and was held in great esteem by leaders of the all India eminence . Mahatma Gandhi ji, Pandit Jawahar Lal Nehru and Dr Rajendra Prasad ji.

MAN OF GOD

Goswami ji was essentially a man of God. He believed in the Upanishidic

teachings that we could attain salvation if we could develop the skill to control our mercurial minds: and that was possible only through faith, perseverance and Grace. He would, therefore, betake himself every year to the banks of the Ganges at Uttar Kashi and spend the wintry weather in meditations and self introspection. He often said that he had nine months in a year for the Sanatan Dharma when he would not mind assuming any garb . be it that of an ascetic, a politician, a preceptor or even a beggar . in its service and only three months for his self-purification, when he would like to be left alone.

Money had no fascination for him and his entire wordly possessions consisted of his chappals and two sets of a dhoti, bandi and chaddar each of hand spun khadi.

Two of our new centres of pilgrimage that are commonly associated with Goswamiji are the Lakshmi Narayan Temple (Birla Mandir) in New Delhi and the Sapt-Rishi Ashram, about 10 km from Hardwar on the road to Rishikesh. The former was built by Seth Baldeo Dass Birla where Hindus, whether Sanatanists (both swarn and Scheduled Castes). Arya Samajists, Buddhists. Sikhs or Jains, may participate in daily prayers, satsang and kirtan, and tourists may receive hospitality. The later was built by Goswamiji him self as a memorial to his mentor and preceptor, the late Pt Madan Malviya ji, and lies in the sub-mountainous range of the Himalaya. It is a picturesque spot, surrounded with temples and kutiyas on all sides; and it was here that the great Goswami breathed his last and was laid to rest.

His followers and friends have constructed at this site a huge Kirti Stambh of white marble, symbolising the firmness of faith and purity of thought of their master. Thousands of them flock to it every year on the 10th of June from all over the country to lay flowers, garlands and wreaths and pay their homage.

A large number of educational and other institutions have now been set up after his name by his admirers in Punjab. Haryana and Himachal and in the Union Territories of Delhi and Chandigarh. They are trying that their wards follow his foot-prints and inculcate his ideas and ideals. It is time that the nation as a whole salutes him as hero and partakes in his centenary celebrations with the eclat and enthusiasm that they deserve.

सप्तऋषि का बुलावा

डी.आर. मदान
कार्यालय मन्त्री
श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली

किसने है हमको पास बुलाया
किसने ये आश्रम दिखलाया
किसने सुन्दर उपवन बनवाया
शान्ति का अनुभव किसने कराया
हमने ऋषियों के तप को जाना यहाँ
हमने उनकी करुणा को पहचाना यहाँ
हमने उनकी प्रेरणा को पाया यहाँ
हमने उनके आशीष पाए यहाँ
हमने गंगा जी का दर्शन स्नान कर
तनमन निर्मल बनाए यहाँ
सप्तऋषियों ने है हमें बुलाया
हम धन्य जो उनकी कृपा को पाया
हम धन्य जो उनकी कृपा को पाया
दिल में बस यही तमन्ना है
सप्तऋषि बार-बार हमें बुलायें यहाँ
तन-मन को शीतलता-सुख मिलें यहाँ
आत्मा परम आनन्द को पाए यहाँ
आत्मा परमात्मानन्द को पाए यहाँ

मंदिरों की संपदा पर बुरी नजर

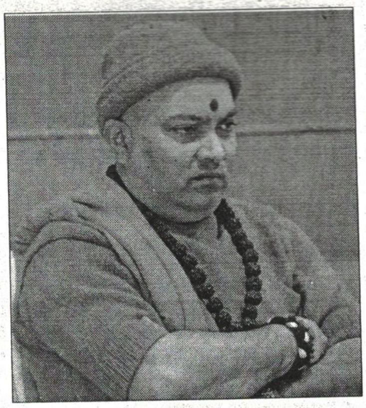

-स्वामी जीतेंद्रानंद सरस्वती

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने मंदिरों में पड़े सोने को अधिगृहीत करने की बात कहकर भारतीय राजनीति में धर्म आधारित एक नए ध्रुवीकरण की पूर्व पीठिका तैयार कर दी है। पृथ्वीराज चव्हाण का तर्क है कि वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के अनुसार देश के मंदिरों में अनुमानित रूप से एक ट्रिलियन डॉलर (करीब 76 लाख करोड़ रूपये) का सोना है। कुछ समय पहले सोशल मीडिया में वामपंथी लॉबी की ओर से हिन्दू मंदिरों से सोना निकालो का अभियान भी छिड़ा था। इसमें वे भी शामिल थे जिनकी मंदिरों में कोई आस्था नहीं है और सनातन हिंदू धर्म एवं उसकी पूजा-पद्धतियों से कोई लेना-देना नहीं है। हिंदू मंदिरों के प्रति दुर्भावना कांग्रेस के पूर्वाग्रह का मूल है। इसी दुर्भावना के कारण इंदिरा गांधी के जगन्नाथ मंदिर में प्रवेश का विरोध हुआ था।

मंदिरों की संपत्ति का लोभ अकारण नहीं है। मुगल काल का इतिहास हजारों-हजार मंदिरों के टूटने का साक्षी है। भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद यह सोचा जाने लगा था कि मुगलों से जो कुछ बचा है उसे अंग्रेज लूट लेंगे, परंतु धर्म के लिए किसी भी हद तक जाकर संघर्ष करने की हिंदू समाज की भावना के कारण अंग्रेजों ने इस समाज से सीधे टकराव लेने की जगह उसे विभक्त करो और शासन करो की नीति अपनाई। अंग्रेजों ने एक कानून (मद्रास हिंदू टेंपल एक्ट 1843) बनाकर मंदिरों की संपदा को लंदन भेजना शुरु कर दिया। 1857 के विद्रोह के कारण अंग्रेज असफल हो गए, फिर भी उन्होंने धार्मिक गतिविधियों को नियंत्रित करने का काम किया। इसके लिए कई कानून बनाए गए जैसे सोसायटी एक्ट, ट्रस्ट एक्ट आदि। 1923 में मद्रास हिंदू टेंपल एंड रिलीजियस प्लेस एंडाउमेंट एक्ट बना। 1920 से लेकर 1947 तक भारत की लाखों हेक्टेयर भूमि चर्चो को चेरिटेबल ट्रस्ट के नाम पर लीज पर दे दी गई। आजादी के बाद कांग्रेस अंग्रेजों की दिखाई राह पर ही आगे बढ़ी। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की रुचि के कारण मद्रास हिंदू टेंपल एक्ट की जगह द हिंदू रिलीजियस एंड चैरिटेबल एंडाउमेंट एक्ट, 1951 बना। इसके बाद स्वतंत्र भारत में हिंदू मठ-मंदिरों की संपत्ति का गलत उपयोग होने का नया दौर देखा गया।

संविधान के अनुच्छेद 29-30 में अल्पसंख्यकों को सारे धार्मिक अधिकार देने के साथ उनके मस्जिद, चर्च एवं शिक्षा की स्वतंत्र व्यवस्था की गई, लेकिन हिंदू मठों पर आश्रित धार्मिक शिक्षा व्यवस्था को धीरे-धीरे समाप्त करने का सिलसिला कायम किया गया। भारत में प्रत्येक मंदिर के साथ एक विद्यालय, चिकित्सालय, गांव तक आने की सड़क अर्थात् संपर्क मार्ग एवं गांव के हर सुख-दुख में संपन्न

होने वाले संस्कारों के लिए मंदिर का बड़ा परिसर एवं उसकी ठाकुरबाड़ी का उपयोग होता रहा है। यही भारत की सामाजिक एकता का बड़ा मंत्र था, जिसे नष्ट किया गया। कम-अधिक मात्रा में दक्षिण भारत के मठ आज भी शिक्षा एवं स्वास्थ्य से जुड़े काम कर रहे हैं, परंतु उत्तर भारत के मंदिर-मंठों में इसका सर्वथा अभाव दीख रहा है।

2012-2013 में केरल सरकार की अधीनता वाले ऐतिहासिक पद्मनाभ मंदिर के स्वर्णाभूषणों की गणना एवं मूल्यांकन लगभग पांच लाख करोड़ रुपये का किया गया था। मूल्यांकन का यह कार्य सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त व्यक्ति की देखरेख में होने के बावजूद करोड़ों का सोना चोरी हो गया, जबकि पुजारी एवं इस मंदिर का निर्माण करने वाले राजा रवि बर्मन परिवार की देखरेख में हजारों वर्षों में भी दस ग्राम सोने की चोरी का कोई समाचार सामने नहीं आया। हम विश्वास किस पर करें ? हजारों वर्षों की अपनी परंपरा पर या वर्तमान व्यवस्था पर ?

हिंदू धर्म दान एक्ट, 1951 के जरिये कांग्रेस ने राज्यों को अधिकार दे दिया कि बिना कोई कारण बताए वे किसी भी मंदिर को अपनी अधीन कर सकते हैं। यह कानून बनने के बाद से आंध्र प्रदेश सरकार ने लगभग 34 हजार मंदिरों को अपने अधीन ले लिया। तिरुपति बालाजी मंदिर की सालाना कमाई लगभग 3500 करोड़ रूपये है। इतना धन मिलने के बाद भी तिरुपति मंदिर को सिर्फ सात प्रतिशत फंड मंदिर के रख-रखाव के लिए वापस मिलता है। इस मंदिर के बेशकीमती रत्न ब्रिटेन के बाजारों में बिकते पाए जा चुके हैं। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएसआर रेड्डी ने तिरुपति की सात पहाड़ियों में से पांच को सरकार को देने का आदेश दिया था। इन पहाड़ियों पर चर्च का निर्माण किया जाना था। मंदिर को मिलने वाली चढ़ावे की रकम में से 80 प्रतिशत गैर हिंदू कार्यों के लिए खर्च की जाती है। मंदिरों के दान में भ्रष्टाचार का स्तर यह है कि कर्नाटक के दो लाख मंदिरों में से लगभग 50 हजार रखरखाव के अभाव में बंद हो गए है।

आचार्य चाणक्य का कहना था कि किसी धर्म को समाप्त करना हो तो उसके आश्रय स्थलों यानी मठ-मंदिरों आदि को समाप्त कर दो। आज भारत में लगभग नौ लाख मंदिर हैं, जिनमें चार लाख मंदिर सरकार के पास है। क्या संवैधानिक रूप से पंथनिरपेक्ष राज्य का मुखिया मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा आदि का संचालन कर सकता है ? मंदिरों का सोना हिंदू समाज की संपत्ति है, न कि सरकार की। इन लोगों को चैरिटी के नाम पर आने वाला लाखों-करोड़ों का चंदा नहीं दीखता ? क्या इस चंदे का इस्तेमाल धर्मांतरण में नहीं होता ? अब समय आ गया है कि चर्चों के शक्तिशाली संगठन के समानांतर हिंदू मंदिरों का प्रबंध तंत्र खड़ाकर शिक्षा-स्वास्थ्य और प्राचीन ऋषि परंपरा में शोध एवं विकास का काम किया जाए। इस हेतु मंदिरों का योगदान परिलक्षित होना चाहिए। जिस प्रकार अन्य धार्मिक समूह अपने धर्म के प्रसार के लिए धन खर्च करते है उसी तरह हिंदू समाज को भी विश्व में यह कार्य करने का अधिकार है।

अमृत-प्रार्थना

प्रो. रमाकान्त आंगिरस
पूर्व अध्यक्ष
कालिदास चेयर्स, संस्कृत विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

'परमशिव हे
करुण शिव हे !
तुम्हीं अब
हमको बताओगे
कि यह जो
चतुर्दिक
मृत्यु का
ताण्डव चला है
कब
कहाँ
कैसे रुकेगा?
अपनी रची हुई
माया के जाल में
बुरी तरह
उलझे हम
भूल गए
मन्त्र वे सब
निकलने की
दिशा जो
हमको बताते।
आते हैं याद
बार-बार
वही मन्त्र
जो हिंसा की जलन
और अहम्
थोथा सा जगाते।
अन्तस् की नमी
सूख जाने से
ठूँठ बने
पेड़ से हम स्तब्ध
खड़े
शवों के
बढ़ते हुए
आतंक से हम
भूल चुके
ज्ञान की
उपलब्धियाँ सब!
प्रार्थना करते हैं
तुम से
करुण शिव हे!
करुणा की
वर्षा के
चार
बस छींटे गिरा दो
शव बनी
इस मनुजता को
फिर से तुम
शिव बना दो ।'

पितृपक्ष

डॉ० श्यामनाथ झा
दिवान कृष्ण किशोर आदर्श
स.ध. संस्कृत कालेज, अम्बाला छावनी

सनातन धर्म में आश्विन मास के कृष्ण पक्ष के पंद्रह दिन 'पितृपक्ष' के नाम से विख्यात हैं। इन पंद्रह दिनों में लोग अपने पितरों को जल देते हैं और उनकी मृत्यु तिथि पर श्राद्ध करते हैं। हमारे ऊपर जो पितरों का ऋण होता है वह श्राद्धों द्वारा चुकाया जाता है। पितृपक्ष श्राद्धों के लिए निर्धारित पंद्रह तिथियों का एक समूह है। वर्ष के किसी भी मास तथा तिथियों में स्वर्गवासी हुए पितरों के लिए पितृपक्ष की उसी तिथि को श्राद्ध किया जाता है। यदि किसी का देहान्त पूर्णिमा पर होता है तो उनका श्राद्ध भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को करने की विधि है।

'श्राद्ध' का अर्थ होता है श्रद्धा से जो कुछ दिया जाय। पितृपक्ष में श्राद्ध करने से पितृगण वर्षभर प्रसन्न रहते हैं। पितृपक्ष में श्राद्ध तो मुख्य तिथियों में होते हैं परन्तु तर्पण प्रतिदिन किया जाता है। देवताओं तथा ऋषियों को जल देने के बाद पितरों को जल देकर तृप्त किया जाता है। यद्यपि प्रत्येक अमावस्या पितरों की पुण्यतिथि है तथापि आश्विन मास की अमावस्या पितरों के लिए परम फलदायी है। पितृपक्ष की नवमी माता के श्राद्ध के लिए पुण्यफलदायी है। पुण्य क्षेत्र में माता का श्राद्ध करने से पुत्र अपने मातृ-ऋण से सदा-सदा के लिए मुक्त हो जाता है। धर्मशास्त्रों में कहा गया है -

आयुः प्रजां धनं वित्तं स्वर्ग मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं प्रीता नृणां पितामहाः।।

अर्थात् पितरों को पिण्डदान करने वाला गृहस्थ दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि,यश,स्वर्ग, पुष्टि, बल, लक्ष्मी, पशु, सुख-साधन धन आदि की प्राप्ति करता है।

शास्त्रों में ये भी बताया गया है कि -

लँगड़ा, काना, अंगहीन, अधिक अंग वाले ब्राह्मण को श्राद्ध में भोजन नहीं कराना चाहिए-

खंजो वा यदि वा काणो दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत।
हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेद् बुधः।।

कहा गया है कि देवकार्य, पूजा पाठ आदि में ब्राह्मणों की परीक्षा न करें, किन्तु पितृकार्य में अवश्य करें-

न ब्राह्मणं परीक्षेत देवकार्येषु प्रायशः।
पितृकार्ये परीक्षेत ब्राह्मणं तु विशेषतः।।

जो श्राद्ध करने के अधिकारी हैं, उन्हें पूरे पंद्रह दिनों तक क्षौरकर्म नहीं करना चाहिए। तेल आदि भी नहीं लगाना चाहिए। पान खाना, स्त्री-प्रसंग, दूसरे का अन्न भी श्राद्ध के दिनों में वर्जित है।

कूर्म पुराण में कहा गया है कि श्राद्ध के दिन पितृगण 'श्राद्ध का समय आ गया है', ऐसा सोचकर मन के समान तीव्रगति से परस्पर एक दूसरे का मन से ध्यान करके तत्काल ही श्राद्ध स्थल पर पहुंचते हैं।

निमन्त्रित ब्राह्मणों के लिए भी कर्त्तव्य है कि एक जगह निमन्त्रण मिलने पर दूसरे जगह नहीं जाना चाहिए। ऐसा करने वाला घोर नरक में जाता है। किसी दूसरे के भूभाग पर भी अपने पितरों का श्राद्ध नहीं करना चाहिए। ऐसे स्थान पर किया जा सकता है जहाँ किसी का स्वामित्व न हो।

श्राद्ध में गोबलि, श्वानबलि, काकबलि, देवादिबलि, पिपीलिकाबलि देना चाहिए।

श्राद्ध में क्या-क्या पवित्र है इस विषय में शास्त्र कहते हैं-

त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः।
वर्ज्याणि प्राह राजेन्द्र क्रोधोऽध्वगमनं त्वरा ।।

दौहित्र, मध्याह्न का समय, तिल ये पवित्र होते हैं। क्रोध, अध्वगमन,शीघ्रता श्राद्ध में नहीं करना चाहिए।

आश्विन मास के पितृपक्ष में पितरों को आशा लगी रहती है कि हमारे पुत्र-पौत्रादि हमें पिण्डदान तथा तिलाञ्जलि प्रदान करेंगे। इसी आशा के साथ वे पितृलोक से पृथ्वीलोक पर आते हैं। अतः प्रत्येक हिन्दू गृहस्थ का धर्म बनता है कि पितृपक्ष में अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध एवं तर्पण अवश्य करें तथा विभव के अनुसार फल-मूलादि का अर्पण करें। पितृपक्ष पितरों के लिए त्योहार का समय होता है।

पितृविसर्जनी अमावस्या-

आश्विन कृष्ण अमावस्या को पितृविसर्जनी अमावस्या या महालया कहते हैं। जो व्यक्ति पितृपक्ष के पंद्रह दिनों तक श्राद्ध तर्पण आदि नहीं करते हैं, वे अमावस्या को ही अपने पितरों के निमित्त श्राद्धादि करते हैं। जिन पितरों की तिथि याद नहीं उनके निमित्त श्राद्ध, तर्पण, दान इसी अमावस्या को किया जाता है। इस दिन सभी पितरों का विसर्जन होता है। अमावस्या के दिन पितर अपने पुत्रादि के द्वार पर पिण्डदान एवं श्राद्धादि की आशा में जाते हैं, यदि वहां उन्हें पिण्डदान या तिलाञ्जलि नहीं मिलती है तो वे शाप देकर चले जाते हैं। इसलिये श्राद्ध का परित्याग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। श्राद्ध की रात्रि में पति-पत्नी को ब्रह्मचारी रहना चाहिए। क्योंकि श्राद्ध करके तथा श्राद्ध का अन्न खाकर जो व्यक्ति मैथुन सेवन करता है, वह महा रौरव नरक भोगकर पुनः कीटयोनि को प्राप्त करता है।

वैदिक कर्मकाण्ड में संस्कारों की उपादेयता

डॉ0 श्याम लाल गौड़
स0अ0
नव्य व्याकरण
श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार

जिसके वैदिक संस्कार विधिवत् सम्पन्न हुए हैं। जो नियम पूर्वक रहकर मन और इन्द्रियों पर विजय पा चुका है। उस विज्ञ पुरुष को इस लोक और परलोक में कहीं भी सिद्धि प्राप्त होने में देर नहीं लगती। महाभारत में कहा गया है –

संस्कृतस्य हि दान्तस्य नियतस्य यतात्मनः।
प्राज्ञस्यान्तरा सिद्धिरिहलोके परत्र च।।

जिस प्रकार खान से निकली धातु जब यन्त्रों से संस्कृत होकर बाहर आती है तो व्यवहार जगत् में उसकी उपयोगिता और मूल्य दोनों ही पूर्व से अधिक हो जाते हैं। इसी प्रकार मानव के सुसंस्कृत होने से उसका गौरव बढ़ जाता है। सनातन धर्म में मनुष्य गर्भ से लेकर मृत्यु पर्यन्त शुभ संस्कारों से प्रभावित रहता है तथा उसका आगामी जीवन पर भी प्रभाव देखने में आता है। इसके अनेक प्रभाव वैदिक धर्म ग्रन्थों में देखने को मिलते हैं। महर्षि व्यास, देवर्षि नारद, महर्षि अगस्त्य, प्रह्लाद आदि के जीवन में शुभ संस्कारों का प्रभाव स्पष्ट रूप में दिखलायी देता है।

विश्व के प्रायः हर धर्म–जाति में प्राणि के कल्याण हेतु संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं, पर उनका रूप एक दूसरे से भिन्न होता है पूर्व और पश्चिम के संस्कार भिन्न–भिन्न हैं। उनके अनुसार उनके जीवन लक्ष्य के प्राप्ति के पथ भी भिन्न हैं। वैदिक सनातन धर्म में संस्कारों का विशेष महत्व है। इस कारण इन्हें अनिवार्य रूप से उचित समय पर सम्पन्न कराने के विधान हैं। श्री राम चरित मानस में वर्णन आता है–

'' नान्दी मुख श्राद्ध करि जातकरम सब कीन्ह।
घटक धेनु वसनमनि नृप विप्रन्ह कह दीन्ह''।।
'' करन वेध उपवीत विआहा, संग-संग सब भये उछाहा''।।

संस्कार मानव समाज का मेरूदण्ड है। यह शिष्टता, सौजन्यता तथा शील की आधार शिला है। सुसंस्कारी, चरित्रवान, तथा शीलवान व्यक्ति मरकर भी अमर होते हैं। आज संस्कारों के अभाव में लोभ वासनात्मक दृष्टि, विवेक हीनता, असंयम, उच्छृंखलता, तथा धैर्य एवं संकल्प शक्ति की कमी प्रत्यक्ष दिखलायी पड़ती है। युवा पीढ़ी संस्कारों के अभावों में लगातार भटकाव की ओर बढ़ रही है। कुसंस्कारी लोगों को चार चीजें मिलती हैं- अपार अशान्ति, अनवरत दुःख, मरणोत्तर नरक एवं आसुरी योनि की प्राप्ति, इन सब से हम बचे रहें, इसलिए हमें संस्कार सम्पन्न होना चाहिए।

संस्कारी व्यक्ति का प्रत्येक आचरण धर्ममय होता है, और उसका प्रत्येक कर्म निरन्तर प्रकाश की ओर

ले जाने वाला होता है। संस्कार सम्पन्न बनने के लिए हमें अपने दोषों को दूर करना होगा। अपने को शुभ, सात्त्विक और उच्च चरित्र वाला सुसंस्कृत मनुष्य बनाना होगा। अच्छे संस्कारों से ही शुभ कर्म होते हैं। शुभ कर्म वही हैं, जिनसे हमारा अन्तः करण पवित्र हो, मन के भाव उन्नत तथा विशुद्ध हों। अतः अन्नदोष, संगदोष, असद् आचरण और भगवान की विमुखता से अपने को बचाने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में उसी जीवन को प्रशस्त माना जाता है, जो शान्त, संन्तुष्ट तथा आनन्दमय हो। आदर्श जीवन शैली में संयम और सादगी का विशेष मूल्य है। तथा अनुशासन और विनय का बहुत महत्व है। ऐसा होना सुसंस्कारों पर ही निर्भर है। संस्कारों के बिना व्यक्ति का जीवन दिग् भ्रान्त नाविक विहीन जहाज के समान इस विस्तृत भव सागर में डगमगाता रहता है।

धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार सुसंस्कृत व्यक्ति को चाहिए कि वह जितेन्द्रिय, पवित्र, चंचलता रहित, सबल, धैर्यशील, लोभहीन, सदाचरण परायण और सर्वभूत हितैषी बनकर अपने शरीरस्थ काम, कोध, मोह, लोभादि शत्रुओं को जीत सकें।

लोक रीति के अनुसार बालक पर ही देश, जाति , धर्म तथा संस्कृति का भविष्य निर्भर है। संस्कारों से ही बालक सद्गुणी, सुविचार सम्पन्न, सत्कर्मी, सेवाधर्मी, आदर्शवान्, अनुशासित एवं संयमी बनता है। इनके संस्कारित होने से ही समाज और देश भी सुसंस्कारित होगा, जबकि इसके विपरीत, इनके संस्कार हीन होने पर इनके साथ-साथ इनकी स्वयं की, समाज की तथा देश की दुर्दशा हो जाती है। क्योंकि बालक अनुकरण प्रिय होता है, उसे जो शिक्षा मिलेगी वही ग्रहण करेगा। इसलिए उन्हें राम जैसी शिक्षा देनी चाहिए-

'' प्रातः काल उठि के रघुनाथा। मातु पितु गुरु नावहि माथा।।

और पद्म पुराण भी बालक को यही शिक्षा देने का उपदेश देता है-

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवता।।
पितरो यस्य तृप्यन्ति सेवया च गुणेन च।
तस्य भागीरथीस्नानमहन्यहनि वर्तते।।
सर्वतीर्थ मयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात्सर्वयत्नेन पूजयेत्।।

यही हमारी वैदिक आर्य संस्कृति रही है, जो हमको परस्पर मिलकर चलने व प्रेमपूर्वक व्यवहार करने की शिक्षा देती है। ऋग्वेद् के इस मन्त्र से यह बात स्पष्ट होती है:-

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै।।

हम साथ-साथ बढ़ें, साथ-साथ शक्ति प्राप्त करें, हम परस्पर द्वेष ना करें- यह भाव हमें परस्पर एक दूसरे के प्रति रखना चाहिए। यजुर्वेद प्राणि मात्र को यह सन्देश देता है कि सभी प्राणियों को परस्पर, एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखने की शिक्षा देते हुए कहता है:-

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।

इसके अलावा बालक को यथायोग्य सदाचार पालन की शिक्षा और शास्त्र पठन-पाठन की शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए। क्योंकि तैतिरीयोपनिषद् में कहा गया है। ज्ञान के बिना सद् चरित्र कैसा-

''ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च''।।

वास्तव में यदि देखा जाय तो संस्कार ही हमारे मूल में बसा रहता है, जिसके कारण हम, वही कर्म करते हैं जो हमें हमारे संस्कारों से प्राप्त हुए होते हैं। संस्कारित मनुष्य कर्म का विश्लेषण करने के पश्चात् ही कर्म को करने और न करने का निर्णय लेता है। इस पर भी, वह वही कर्म करेगा, जो उसके लिए व समाज और राष्ट्र के लिए हितकर होगा। क्योंकि उसे बार-बार वह स्मरण होता रहता है जो उसे संस्कार स्वरूप सिखाया जाता है। मातृ देवो भव ! पितृ देवो भव ! राष्ट्र देवो भव ! अतिथि देवो भव ! ये वे उदात्त विचार है जो संस्कारित बालक को उच्च जीवन, कृत्य भावना, सम्मान देने की शिक्षा और अपने निजी स्वार्थों को त्याग कर आजीवन राष्ट्र के लिए जीने की भावना सिखाते हैं।

यही नहीं संस्कार ही मनुष्य मात्र की आत्मा है। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर मात्र की कल्पना व्यर्थ है, ठीक उसी प्रकार संस्कार के बिना सभ्य समाज, सुसंस्कृत मानव की कल्पना करना भी व्यर्थ ही साबित होगा। इसलिए हमें निम्न वचनों को आत्मसात् करना होगा-

आचारः परमो धर्मः सर्वेषामिति निश्चयः।
हीनाचारपरीतात्मा प्रेत्य चेह विनश्यति।।
सर्वलक्षणहीनोपि यः सदाचारवान्नरः।
श्रद्दधानोनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।
धर्ममूलं निषेवेत सदाचारमतन्द्रितः ।।
मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्ड़ितः।।

सुख का अनुभव करने के लिए समता अनिवार्य

डॉ. राजेन्द्र कुमार गोनियाल
श्री जगदेव सिंह संस्कृत महाविद्यालय
सप्तऋषि आश्रमः सप्तसरोवर हरिद्वार।

समता किसे कहते है? विषमता को समाप्त करना समता कहलाता है। समता की प्रतिष्ठा आत्मा में होती है या फिर अन्तः करण में। विषमता का आधार अन्तःकरण है। बाह्य जगत् की ओर ले जाने वाला अन्तःकरण विषम हो जाता है। पहले अन्तः करण विषम होता है उसके बाद उसके प्रभाव से आत्मा में भी विषमता आ जाती है।

क्या अन्तःकरण में समता की प्रतिष्ठा की जा सकती है? बिल्कुल भी नहीं। इसका कारण यह है कि अन्तः करण प्रकृति का उत्पाद है और प्रकृति परिवर्तनमूलक है, इसलिए उसके उत्पादों में समता की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती।

क्या अन्तःकरण में समता की प्रतिष्ठा करने का प्रयास नहीं करना चाहिए? अन्तःकरण में समता की नहीं, संगति की प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

समता और संगति में क्या भेद है? समता चेतना का स्वभाव अर्थात् जो आत्मा जितना अधिक चैतन्य में होती है, उतना ही वह समता में भी होती है। समता में वही प्रतिष्ठित हो सकता है, जिस पर परिवर्तनशील का नियम लागू न होता हो और यह केवल आत्मा पर लागू होता है। संगति का सम्बन्ध गति अर्थात परिवर्तनशीलता के साथ है। अन्तःकरण और शरीर दोनों में संगति होनी चाहिए, आत्मा में समता और अन्तःकरण में संगति होने पर समस्त विकारों से मुक्त होकर संसार की यात्रा की जा सकती है।

समता का स्वरूप क्या है? सुख के स्तर पर दुःख को, लाभ के स्तर पर हानि को और जय के स्तर पर पराजय को अनुभव करना समता है। सुख का अनुभव करते हुए आत्मा प्रसन्नता के जिस सोपान पर रहती है, उसी पर दुःख का अनुभव करते हुए रहना समता है। जैसा अनुभव लाभ के समय होता है, वैसा ही अनुभव हानि के समय यदि आत्मा करती है तो वह समता में प्रतिष्ठित है। विजय का वरण करते समय जैसी आत्मा की होती है, वैसी ही पराजय के समय अनुभव करना समता में प्रतिष्ठित होना है।

समता की प्रतिष्ठा करने का मार्ग क्या है? समता प्रतिष्ठत करने की तीन अर्हताएँ है- कर्म के बन्धन से मुक्ति, असत्य का परित्याग और सत्य की प्रतिष्ठा, शान्ति का गहरा अनुभव।

समता का अर्थ क्या है और वह कहाँ घटित होती है? आत्मा केवल सुख का अनुभव करने के लिए है, परन्तु अन्तःकरण सुख और दुख दोनों का अनुभव कर सकता है। जब तक आत्मा अन्तःकरण के अधीन नहीं होता, तब उसे अन्तःकरण के समान सुख और दुःख दोनों का अनुभव होता है। हम यह समझ सकते है कि अन्तः करण के अधीन हो जाने पर आत्मा वही समझता है, जो उसे अन्तः करण समझाना चाहता है।

क्या अन्तः करण में समता की प्रतिष्ठा की जा सकती है? बिल्कुल भी नहीं। इसका कारण यह है कि अन्तः करण प्रकृति का उत्पाद है और प्रकृति के त्रिगुणात्मक (एक अवस्था में स्थिर बद्ध) होने के कारण अन्तः करण में समता की प्रतिष्ठा संभव नहीं है।

क्या आत्मा में समता की प्रतिष्ठा की जा सकती है? केवल आत्मा में ही समता की प्रतिष्ठा की जा सकती है। आत्मा जब सुख के अतिरिक्त किसी और के अनुभव के लिए नहीं है, फिर उसमें समता की प्रतिष्ठा

करने की आवश्यकता क्यों हुई ? अन्त: करण के अधीन काम करने वाली प्रत्येक आत्मा में समता प्रतिष्ठा करना आवश्यक है, क्योंकि आत्मा अन्त: करण के प्रभाव से सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय का अनुभव करने वाली हो जाती है, जबकि आत्मा को इसमें से प्रथम अर्थात् सुख, लाभ और जय का अनुभव करना चाहिए, लेकिन अन्त : करण का शिष्यत्व या उसका स्वभाव अपना लेने वाली आत्मा ऐसा नहीं कर पाती है।

जब सुख और दु:ख दोनों का अस्तित्व है, फिर उसे स्वीकार करने में समस्या क्या है ? त्रिगुणात्मक होने के कारण प्रकृति और उसके उत्पादों में दोनों उपस्थित रहते हैं ? इसलिए चेतन आत्मा के संयोग से अन्त: करण आत्मा को दोनों का अनुभव कराता है, परन्तु आत्मा केवल सुख का अनुभव करने के लिए है, इसलिए उसे समता की आवश्यकता है और जब तक समता में वह प्रतिष्ठित नहीं होता, तब तक वह दु:खी ही रहता है।

चेतन का धर्म अनुभव करना है, वह सुख और दु:ख में भेद क्यों करेगा ? एक को देखे और दूसरे को न देखे, इस प्रकार देखने वाले का कलर ब्लाइंड कहा जाता है, एक का अनुभव करने पर क्या आत्मा भी ऐसा नहीं हो जाएगी। चेतन का अर्थ सम्यक् ज्ञान है और जड़ता तक पहुँच बनाने वाला सम्यक् ज्ञान नहीं कर पाता है। वस्तु के चार तल होते हैं- जड़ता, चेतना, परमात्मचेतना और परमचेतना। जड़ता तक सीमित रह जाने वाली आत्मा को वस्तुओं से केवल दु:ख की प्राप्ति होती है, चेतना तब पहुँच बनाने वाले व्यक्ति को सुख और दु:ख दोनों मिलते हैं, परमात्मचेतना तक पहुँच बनाने वाली आत्मा वस्तुओं से सुख की प्राप्ति करती है और जिसकी पहुँच परम चेतना तक हो जाती है, व उस वस्तु से परम सुख को प्राप्त करती है।

क्या उपर्युक्त वक्तव्य से यह आशय ग्रहण किया जा सकता है कि अनुभव चार प्रकार का होता है? निश्चित रूप से। अन्त: करण के द्वारा केवल जड़ता का अनुभव किया जा सकता है अर्थात् वह दु:ख के अतिरिक्त और कुछ अनुभव नहीं कर सकता है।

संसार में लोग सुख और दु:ख दोनों का अनुभव करते हुए देखे जाते हैं ? क्या वह असत्य है ? जिसने कभी सुख का अनुभव न किया हो, उसे दु:ख का न्यून स्तर भी सुख प्रतीत होता है। ट्रेन में खड़ा व्यक्ति खड़े रहते हुए दु:ख का अनुभव करता है, लेकिन सीट मिल जाना उसे सुख प्रतीत होता है, परन्तु क्या सीट मिल जाने से व्यक्ति उस विश्रान्ति का अनुभव कर सकता है जो उसे घर पर रहते हुए मिलती ? निश्चित रूप से नहीं, इसी प्रकार संसार दु:ख को सुख समझता रहता है, लेकिन वहां सुख होता नहीं है।

संसार भी रहे और सुख प्राप्ति भी हो, वह किस स्तर पर होती है ? चेतना के तल पर जीने वाली आत्मा को कुछ-कुछ सुख की अनुभूति होने लगती है ? लेकिन वास्तव में सुख परमात्मचेतना के तल पर ही प्राप्त होता है, परन्तु पूर्ण विश्रान्ति परम चेतना के तल पर होती है, क्योंकि वहीं पर परम सुख उपलब्ध होता है।

क्या यह माना जाए कि दु:ख की अनुभूति प्रथम तल पर रह जाने का परिणाम है ? निश्चित रूप से ऐसा ही है। सुख प्राप्त करने की इच्छुक आत्मा को परमात्मचेतना और परम चेतना के तल का स्पर्श करना चाहिए।

वस्तु के तीसरे और चौथे तल का स्पर्श करने के लिए समता की क्या आवश्यकता है, क्या उसके बिना बात नहीं बन सकती ? बिल्कुल भी नहीं। समता का इतना ही तात्पर्य है कि आत्मा अन्त: करण की अधीनता से बाहर आ गई है, वह स्वतन्त्र हो गई है, उसने अपनी आँखों से देखना प्रारम्भ कर दिया है, आँखों के होते हुए भी वह अन्त : करण से देख रही थी, इसलिए उसे दु:ख का अनुभव हो रहा था।

क्या संसार में दु:ख का अस्तित्व नहीं है ? है भी और नहीं भी। प्रथम तल तक रह जाने वाली आत्मा के लिए सुख और दु:ख दोनों का अस्तित्व है, परन्तु तीसरे और चौथे तल का स्पर्श करने वाली आत्मा के लिए दु:ख, हानि और पराजय अस्तित्वहीन होते हैं। इसलिए समता की प्रतिष्ठा करना आवश्यकता है।

सनातन धर्म में पंच तत्त्वों की पूजा

विशाल भारद्वाज

सनातन धर्म में पंचतत्त्वों की पूजा का विधान दिया गया है। ये पंचतत्त्व हैं-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश।

1. पृथ्वी तत्त्व की पूजा-

सर्वप्रथम कर्मकाण्ड मेंयानि पूजा विधान में, बैठने के लिए पृथ्वी की पूजा की जाती है।

पृथ्वी त्वया धृता लोका: देवि। त्वं विष्णुना घृता।

त्वं च धारय मां देवि। पवित्रं कुरु चासनम्।।

हे पृथ्वी माता। आपने पूरे लोक को धारण किया हुआ है। आपने पूर्व काल से ही विष्णु को भी धारण कर रखा है हे पृथ्वी माता आपने मुझे भी धारण कर रखा है। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

इस माध्यम से प्रथम तत्त्व पृथ्वी की पूजा पूर्ण होती है।

2. जल तत्त्व की पूजा-

द्वितीय पूजा जल की की जाती है। कलश की स्थापना की जाती है। मिट्टी या तांबा, चांदी, सोना, पीतल आदि शुद्ध धातु के कलश का प्रयोग किया जाता है। इस कलश के मध्य में शुद्ध चन्दन, दुर्वा, पंच पल्लव, 7 स्थानों की मिट्टी, सुपारी,पंच रत्न, चांदी का सिक्का, सर्वोषधी (मुरा, मासी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी, सही, चम्पका, मुस्ता आदि) डाली जाती हैं। इन सभी औषधियों का प्रयोग आयुर्वेद में किया जाता है। कलश के मध्य ये औषधियां डालकर मंत्रों के साथ कलश को स्थापित किया जाता है। इन सब चीजों से मिश्रित जल को 3-5-7 दिन के लिए रखा जाता है। इन दिनों में जल में औषधियों के गुण मिश्रित हो जाते हैं। कहते हैं प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है तो कलश से प्रार्थना की जाती है कि गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा का जल आकर इसमें समाहित हो जाए। ज्ञान देने वाले वेद आकर इस जल में समाहित हो जाएं। सभी समुद्रों का जल आकर इस जल में समाहित हो जाए, जब पूजन पूर्ण हो जाता है तो कलश को उठाया जाता है और उस जल को स्नान या पीने के प्रयोग में लाया जाता है। जैसे सवर्ण, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातुओं के बर्तनों में भोजन करने से शरीर को लाभ मिलता है वैसा ही लाभ हमें इस जल के सेवन से प्राप्त होता है।

3. अग्नि तत्त्व की पूजा :

अग्नि तत्त्व की पूजा रूप में हम ज्योति की स्थापना करते हैं। ज्योति की स्थापना करके प्रार्थना की जाती है कि सूर्य की शक्ति आकर इस ज्योति के अन्दर विराजमान हो, इस जोत को आत्मा स्वरूपा भी माना गया है, आत्मा हमारे शरीर में इस ज्योति रूप में ही विराजमान है। जब तक यह अग्नि तत्व शरीर में है तब तक ही शरीर कार्य करता है। दूसरा महत्व यह है कि घी का प्रयोग जोत में किया जाता है जब

घी बत्ती के माध्यम से अग्नि के सम्पर्क में आता है तो आक्सीजन पैदा होती है और वह उतनी ही मात्रा में रहती है जो हमें लाभ प्रदान करने वाली होती है।

4. वायु तत्त्व की पूजा :-घंटिका के रूप में हम वायु की पूजा करते हैं। घण्टिका पर गरुड़ विराजमान हैं। एक पूर्व संवाद के अनुसार हनुमान जी और गरुड़ में संवाद होता है। धर्म के विषयों पर जब चर्चा बढ़ती जाती है तो कुछ प्रश्नों का उत्तर गरुड़ नहीं दे पाते तो वह स्वयं को हारा मान कर सूर्य के पास जाते हैं जो हनुमान और गरुड़ के गुरू बताये गये हैं। गरुड़ प्रश्न करते हैं, "हम दोनों ने आपसे शिक्षा ग्रहण की तो मैं शास्त्रोचार में क्यों हार गया।" सूर्य प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि शिक्षा पूर्ण होने से पहले ही विष्णु जी की सेवा में प्रवृत्त होने के कारण ऐसा हुआ है तो गरुड़ आग्रह करते हैं कि मेरी शिक्षा पूर्ण करें जो सूर्य के गतिमान होने पर ऐसा संभव नहीं था तो गरुड़ आग्रह करते हैं कि मैं आपके साथ उड़ता रहूंगा। सूर्य शिक्षा देना आरम्भ करते हैं जब आरती के अन्तिम मंत्रों का वर्णन आता है तब गरुड़ मूर्च्छित होकर गिर पड़ते हैं। होश में आने के बाद सूर्य से प्रार्थना करते हैं। तब सूर्य आशीर्वाद देते हैं कि आरती के अन्तिम मंत्रों को कोई नहीं जानेगा। घण्टिका पर आपका वास होगा जब घण्टिका बजाई जाएगी तब आरती के अन्तिम मंत्र पूर्ण होंगे।

''आगमनार्थन्तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थान संनिधौ।''

देवताओं को आगमन के लिए राक्षसों के गमन के लिए हे घण्टिके! मैं आपका नाद करता हूँ। इस स्थान पर देवताओं का वास हो जाए।

यहाँ बुरे विचारों को राक्षस कहा गया है अच्छे (शुभ) विचारों को देवता कहा गया है।

5. आकाश तत्त्व की पूजा : शंख को आकाश तत्व माना गया है।

'शंख मध्ये स्थितं तोयं भ्रमितं आरतीकोपरी
अङ्ग लग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्योपरि।।''

शंख के मध्य स्थित जल से जो छींटा लगाया जाता है वह ब्रह्म हत्या के दोष का भी निवारण कर देता है। शंखनाद कर आकाश तत्व की पूजा की जाती है।

इस प्रकार सनातन धर्म में सृष्टि के प्रत्येक वस्तु और प्राणी के निर्माण के मूल में स्थित पंच तत्वों की पूजा का विधान हर प्रकार के कर्मकाण्ड के साथ जोड़ा गया है। इस प्रकार की प्रक्रियाएं सनातन धर्म के प्रकृति से गहरे जुड़ाव की उद्घोषणा करती है।

कोरोना काल

डॉ. भारती बन्धु

नववर्ष 2020 के स्वागत की खुशियाँ अभी मनाई ही जा रही थी, शुभकामनाओं का आदान-प्रदान अभी हो ही रहा था, नववर्ष के नव संकल्प अभी लिए ही जा रहे थे, इस वर्ष पर्यटन पर कहाँ जाना है ये योजनाएं अभी बन ही रही थी कि चीन से कुछ डरावनी खबरें और तस्वीरें आने लगी कि एक वायरस वहाँ के शहर वूहान में फैल गया है, जिस से सैकड़ों लोग मर रहे हैं। हालांकि ये कहा गया कि ये मनुष्य से मनुष्य में नहीं फैलता लेकिन देखते न देखते चीन आने-जाने वाले लोगों के माध्यम से ये खतरनाक वायरस पृथ्वी के सारे देशों में फैलता चला गया। किसी फिल्म की कहानी जैसी लगने वाली इस सच्चाई की सच्चाई पर से पर्दा जब तक पूरी तरह से उठता तब तक संसार के अत्यन्त विकसित हिस्से अमेरिका और यूरोप इसमें बुरी तरह उलझ गए। देखते-देखते मार्च में यह भारत में भी पहुंच गया। पहले सब को लगा कि विदेशों में घूमने वाले उच्चवर्ग के लोगों पर ही ये मुसीबत है, लेकिन अन्य वर्गों में फैलने का वो भयंकर डर सच होता चला गया। पूरे देश में ये त्वरित गति से न फैल जाए इसके लिए तालाबन्दी कर दी गई।

तालाबन्दी के पहले दौर के बाद दूसरे दौर में अपने घरों से दूर दूसरे राज्यों में काम करने वाले लोग अधीर हो उठे, उन के पास पैसे खत्म हो गए, मालिक मकान किराया मांगने लगे, भूख ने बेहाल कर दिया। कितनी ही सहायता सरकार तथा समाजसेवी संस्थाओं द्वारा बांटी जाती रही। परन्तु कुछ न कुछ लोग छूट ही जाते। भारत की कामकाजी व्यवस्था ही ऐसी है कि लाखों करोड़ों लोग मजदूरों से लेकर इंजीनियर आदि नौकरी पेशा तक अपने घरों से दूर दूसरे राज्यों में कार्य करते हैं। जिन के पास कुछ साधन थे वो तो अपने काम के स्थानों पर टिके रहे पर जिनके साधन सीमित थे वे अपने घरों की ओर निकल पड़े। शारीरिक मेहनत से कमा कर खाने वाले उन मजदूरों को हजारों कि०मी० पैदल चलना भी इस के लिए मंजूर था। उनके लिए कितनी विशेष ट्रेनें, बसें चलाई गई, कितनी जगह इन्हें ठहराकर भोजनादि उपलब्ध कराया गया परन्तु फिर भी सड़कों पर, रेलवे लाइनों के किनारे चलने वाले इन लोगों का रेला रुकता ही न था। प्रतिदिन इन यात्रियों के मार्मिक चित्र और कहानियां मीडिया पर छाई रहती थी, जो अभी भी रोयें खड़े कर देती हैं। उधर अस्पतालों में डाक्टर, नर्सें और अन्य पैरामेडीकल स्टाफ पर कोविड-19 से संत्रस्त लोगों के इलाज और सेवा का बहुत बड़ा उत्तर दायित्व आ पड़ा। पुलिस पर लॉक डाऊन का पालन करवाने व अनुशासन बनाए रखने की बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी। दवाओं, पी.पी.ई किट्स, वैंटीलेटर, ऑक्सीजन, मास्क, दस्ताने सब की अभूतपूर्व जरूरत आन पड़ी, जिस की आपूर्ति में देश भर की संबद्ध संस्थाएं जुट गई।

इस समय भारतीय जीवन दर्शन के परम तत्व-परोपकार परमोधर्म:, मानव सेवा-भगवत् सेवा, पर विश्वास रखने वाली अनेक समाज सेवी संस्थाएं और व्यक्ति विशेष उठ खड़े हुए। जरूरतमंदों को राशन/पका भोजन पहुंचाना, स्वास्थ्य कर्मियों, पुलिस कर्मियों, प्रशासन कर्मियों की सहायता करना उन का परम उद्देश्य बन गया। पर लॉकडाउन कितने दिन रख सकते थे। देश का काम काज कितना रोक सकते थे, लिहाजा तालाबन्दी खुलने का दौर शुरु किया गया। आज 20 जुलाई को जब मैं ये लेख लिख रही हूँ अॅनलाक के दूसरे दौर में देश में 11 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं 27503 की मृत्यु हो चुकी हैं, 700399 रोगी ठीक हो चुके हैं। स्कूल, कॉलेज, समारोह भी बंद हैं। परीक्षाएं रोक दी गई है। हमारा देश अकेला नहीं है, पूरे विश्व के देशों को कोरोना यानि कोविड-19 का ये डंक झेलना पड़ रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय आवागमन पूरी तरह से बाधित है। पूरे विश्व में 1.46 करोड़ लोग संक्रमित हो चुके हैं, 6.8 लाख की मृत्यु हो चुकी है, 87.34 लाख स्वस्थ हो चुके हैं। अमेरिका और ब्राजील के बाद भारत सर्वाधिक प्रभावित देश बन चुका है। उपरोक्त सब आकड़ें दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं।

इस कोविड-19 की वजह से देशों के आपसी सम्बन्धों पर भी विपरीत असर पड़ रहा है। अमेरिका सहित अनेक देशों ने चीन को इस भयंकर मुसीबत का जिम्मेदार बताते हुए उसे जी भर कोसा है। यहाँ तक समाचार आए कि इस वायरस को वुहान की एक शोध-प्रयोगशाला में जैविक हथियार के रूप में जानबूझ कर बना कर फैलाया गया। उस ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) तक को सही वक्त पर सही सूचना नहीं दी। ये शंका भी जताई गई ऐसा कैसा हुआ कि चीन में विभिन्न क्षेत्रों की बजाय वुहान से ये वायरस सारे संसार में फैल गया। अमेरिका ने चीन का साथ देने और सही समय पर चेतावनी न देने का आरोप लगा कर विश्व स्वास्थ्य संगठन को पहले तो अनुदान देना बंद कर दिया फिर सदस्यता ही छोड़ दी।

हाल ही में इधर कोरोना काल की कठिन परिस्थितियों में उलझे भारत को चीन ने सीमाओं पर भी परेशान करना शुरू कर दिया। बड़ी मुश्किल से फिलहाल युद्ध टल गया है। पर चीन ने अपनी सभी सीमाओं पर अपनी विस्तारवादी नीति के तहत भारत सहित रूस, जापान, भूटान, दक्षिण चीन सागर, वियतनाम, कंबोडिया, म्यांमार आदि सभी को परेशान कर रखा है। नेपाल और पाकिस्तान पर तो कर्ज और अनुदान दे देकर और अपनी सोच की राजनीतिक सत्ता खड़ी कर एक तरह से कब्जा ही कर रखा है।

इन सारी परिस्थितियों का सामना और सब समस्याओं का निवारण और प्रतिदिन उठते संवेदनशील मुद्दों का हल और अनेक पक्षों से दागे जा रहे तीखे प्रश्नों और आलोचनाओं का सामना मजबूत सरकार बहुत निडरता से करते हुए पूरी सामर्थ्य से गरीबों की सहायता भी निरन्तर धनराशि एवं राशन वितरण द्वारा कर रही है। प्रधानमंत्री की पुकार पर बड़े-बड़े धनाढ्यों से लेकर संस्थाओं, मध्यम वर्ग, नौकरीपेशा लोगों ने PM CARE फंड में हजारों

करोड़ रूपए का अनुदान एकत्रित कर दिया है जिससे इस महामारी से लड़ने के संसाधनों से लेकर गरीबों को आर्थिक सहायता तक का प्रबन्ध किया जा रहा है। रेलवे की बोगियों, होटलों, समागम स्थलों पर संभावित रोगियों के लिए बिस्तरों का प्रबन्ध किया जा रहा है। भारत ने आरम्भ में तो विदेशों से भी Ventilators और PPE Kits जैसी चीजें खरीदीं परन्तु अब तो भारत की औद्योगिक मेधा ने सब चीजें देश में ही बनानी शुरु कर दी है। इलाज में सहायक दवाएं तो भारत समस्त संसार में अमेरिका तक को भेज रहा है।

आज कहा ये जा रहा है कि कोरोना आसानी से खत्म होने वाला नहीं है। हमें ही सावधानी पूर्वक इसके साथ जीना, काम करना सीखना होगा। आज बाजार- कार्यालय, औद्योगिक संस्थान खुल गए है, सीमित अतिथियों (50) के साथ विवाहादि करने की छूट दे दी गई है, राज्यों के अन्दर बसें सीमित मात्रा में चला दी गई हैं। अब जरूरत है कि हम अपने बचाव के लिए सतर्क रहें सावधान रहें, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं, मास्क लगाएं, दूसरे व्यक्ति से 2 गज की दूरी बना कर बात करें तो एक सीमा तक इस महामारी पर लगाम लग सकती है। यदि ये सावधानियां नही रखी जाएंगी तो अत्यधिक घनत्व की जनसंख्या वाले भारत में ये महामारी अत्यन्त भयावह परिणाम ला सकती है।

अभी कोविड-19 का खतरा पता नहीं कब खत्म होगा, भारत सहित अनेक देश शोध कर वैक्सीन बनाने की प्रक्रिया में लगे हैं। ईलाज में सहायक दवाओं पर भी शोध किया जा रहा है। 'पतंजलि' ने भी कोरोलिन किट निकाली है जिससे रोग से लड़ने में सहायता मिल सकती है। पर अभी तक न तो इसकी कोई निश्चित दवा आई है और न ही वैक्सीन, सभी इलाज इस वायरस के शरीर में पहुंचने पर होने वाली समस्याओं का हो रहा है। कहा जाता है कि इस दौरान व्यक्ति के शरीर में एण्टी बॉडीज का निर्माण हो जाता है और वे इस वायरस से लड़ कर रोगी को स्वस्थ करती है। इसी लिए स्वस्थ हुए लोगों का प्लाज्मा रोगियों को देकर भी इलाज किया जा रहा है। इस उद्देश्य से प्लाज्मा बैंक भी खोले जा रहे हैं।

ईश्वर से पूरा विश्व आज करबद्ध प्रार्थना कर रहा है कि शीघ्र इस वायरस की प्रलय से उबारें, वैक्सीन रूपी नौका भेज कर किनारे लगाएं। लेकिन जब तक किनारा नहीं मिल जाता हमें साहस के साथ, सावधानी के साथ, हिम्मत के साथ तैरते रहना है और तैरने में दूसरों की सहायता करते रहनी है।

कोविड-19 महामारी के विपत्तिकाल में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब (रजि.) एवं उसकी सम्बद्ध संस्थाओं द्वारा किए गए सेवाकार्य

इस कोरोना महामारी के भयंकर समय में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब भी सेवा कार्यों में स्वयं तो जुटी ही है, इस से सम्बद्ध अनेक सनातन धर्म सभाएं, शिक्षा संस्थाएं, महावीर दल अनेक प्रकार से विभिन्न वर्गों जैसे निर्धनों, मजदूरों, मेडीकल-पैरामेडीकल स्टाफ, पुलिस आदि को राहत पहुंचाने में यथा शक्ति, यथा संभव अग्रिम भूमिका निभा रहे हैं। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ने संबद्ध संस्थाओं, सभाओं, महावीर दलों, देश-विदेश के सनातनी व्यक्तियों द्वारा किए सहयोग से 4243600-00 रुपए पी.एम. केयर फंड में जमा करवाए। अनेक संस्थाओं ने राशन, भोजन, रिफ्रेशमेण्ट वितरण के माध्यम से भी बहुत सेवा की है और अभी भी कर रहे हैं।

- सनातन धर्म सभा अम्बाला कैंट ने 2 लाख 21 हजार रुपए का राशन जरूरतमंदों में बांटने के लिए दिया।
- सनातन धर्म सभा बठिंडा निरंतर 500 लोगों में खाने के पैकेट बांट रही है।
- नौजवान वेलफेयर सोसायटी बठिंडा सभा के साथ मिल कर लंगर, दूध और विभिन्न प्रकार की खाद्य वस्तुएं झुग्गी झोपड़ियों तक पहुंचाई जाती हैं।
- श्री सनातन धर्म महावीर दल बठिंडा ने कोरोना महामारी को बढ़ते देख अपने महावीर दल अस्पताल में 10 कोरोना वार्ड तैयार कर स्वास्थ्य प्रशासन को सौंपे। 500 सेनेटाइजर बांटे, मास्क बांटे और 1.11 लाख रूपए कोविड फंड में दिए।
- महाबीर दल फरीदाबाद ने रोज 500 जरूरतमंदों को भोजन खिलाया।
- महाबीर दल फिरोजपुर ने भी रोज 500 निर्धनों को भोजन खिलाया।
- महाबीर दल फाजिल्का ने भी रोज 500 जरूरतमंदो को भोजन पहुंचाया ।
- महाबीर दल तथा युवा सेवा एसोसिएशन यमुनानगर ने भी अन्य सेवाओं के साथ-साथ 500 लोगों को हर रोज भोजन पहुंचाया।
- महाबीर दल श्री गंगानगर ने भी 500 परिवारों को राशन पहुंचाने की सेवा की।
- गीता भवन मंदिर गुरदासपुर ने 60 परिवारों को 14-14 दिन का राशन देकर सहायता की।
- महाबीर दल मालेरकोटला ने जरूरतमंदों को भोजन के साथ मास्क, सेनेटाइजर तो बांटे ही, संदेशात्मक पोस्टर लगा कर लोगों को कोविड-19 से लड़ने के लिए प्रेरित भी किया। और अन्य धर्मों की सेवा संस्थाओं के साथ मिलकर मन्दिर, गुरुद्वारा, मस्जिद और चर्च को सेनेटाइज किया।

- महाबीर दल तिब्बड़, गुरदासपुर ने रामनवमी के अवसर पर कोरोना कर्फ्यू के दौरान जरूरतमंदों को राशन बांटा।
- अंबाला शहर के तीन-स्कूलों श्री जी आर एसडी. सी. सै. स्कूल, मॉडल स्कूल और एस. डी. पब्लिक स्कूल के 107 स्टाफ सदस्यों ने यथासंभव धनराशि के चेक PM CARE फंड के लिए विधायक को सौंपे।
- महाबीर दल छेहरटा ने 200 लोगों को राशन सामग्री बांटी और साथ-साथ उन परिवारों को सावधानी का पाठ भी पढ़ाया।
- सप्तऋषि आश्रम में निरंतर लंगर के साथ-साथ जरूरतमंद परिवारों को राशन भी बांटा गया।
- सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर) अम्बाला कैंट ने 351000/- रुपए CM CARE फंड में भेजे तथा आस पास के ग्रामों और बस्तियों में 40000/- रु. का राशन, मास्क तथा सेनेटाइजर बांटे और लोगों को जागृत किया।
- महाबीर दल हनुमानगढ़ टाऊन के स्वयंसेवक 24 घंटे कोरोना वारियर्स-पुलिस कर्मी, दमकल कर्मी, सफाई कर्मी, स्वास्थ्य कर्मी, कैलेक्ट्रेट कर्मी व अन्य जरूरतमंदों को चाय बिस्किट की रिफ्रेशमेंट पहुंचाने का कार्य करते रहे।
- बस्सी दौलत खां, होशियारपुर में श्री शिव मंदिर प्रबन्धक समिति की ओर से निरन्तर लंगर घर-घर पहुंचाया गया जिसमें श्री स.ध.प्र.स. के उपप्रधान स्वर्गीय गुरुदत्त जी की याद में 40 गरीब परिवार को राशन पहुंचाया गया।
- लुधियाना से सभा के उपप्रधान श्री केवल कृष्ण ने अपनी पचासवीं वैवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर जरूरतमंदों को 200 किलो चावल, 90 किलो चना दाल, 100 किलो चीनी, 50 लीटर सरसों का तेल मलेरकोटला में वितरण हेतु भेजा तथा 11000/- PM CARE FUND के लिए भेजें।
- उक्त को अतिरिक्त भी सभा से संबद्ध अनेक संस्थाओं एवं व्यक्तियों ने इस कठिन अवसर पर सेवाकार्य किए परन्तु इसकी सूचना प्राप्त नहीं हो पाई। संभवत: वे मौन रह कर सेवा करना चाहते हैं।
- अनेक सनातन धर्मी लोगो ने अपनी शुभ कमाई में से दान दे कर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा द्वारा PM CARE FUND में जमा कराई गई राशि में योगदान किया योगदान जिसकी पूर्ण सूची आगे के पृष्ठों में दी गई है

भाईचारा सांझ मिसाल : रमजान-परशुराम जयंती-अक्षय तृतीय पर मन्दिर-मस्जिद-गुरुद्वारा-चर्च को सैनेटाइस किया

प्रशासन को सहयोग में आगे आया श्री सनातन धर्म महाबीर दल, कोरोना के 10 वार्ड बनाए

Contributios made by Sanatan Dharma organisations, members and well wishers for

PM CARES FUND, CMF & Other Agencies

1	PMLSD Public School Sector 32C, Chandigarh	1,100,000
2	PMLSD Public School Sector 19C, Chandigarh	500000
3	Sh Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha,New Delhi	500,000
4	Sanatan Dharam College (Lahore), Ambala Cantt, CMF	351,000
5	S.D. College (Lahore), Ambala Cantt, Dry Ration	40,000
6	Sh Sanatan Dharma Education Board, Chandigarh	200000
7	GGDSD Bhawan Sector 19A, Chandigarh	100000
8	GGDSD College, Hariana (Hsp)	100000
9	GGDSD Sen Sec School, Hariana (Hsp)	100000
10	CLKSD playway School, Hariana (Hsp)	100000
11	S D Phullarwan Girls Sr. Sec. School, Jalandhar	100000
12	GGDSD College, Rajpur (H.P)	51000
13	Geeta Bhawan Mandir, Gurdaspur	51000
14	Sh Jagdev Singh Skt College, Haridwar	51000
15	DKKD Adarsh Skt College, Ambala Cantt, LBSSS	33000
16	DKKD Adarsh Skt College, Ambala Cantt.	5000
17	MPMSD College for girls, Ismailabad, CMF	31000
18	MPMSD College for girls, Ismailabad	5100
19	NKSD Chand Senior Secondary School, Palampur (H.P)	31000
20	Shri Sanatan Dharma Sabha, Palampur (H.P)	21000
21	LSD SR SEC School, Bassi Daulat Khan, Hoshiarpur	21000
22	Sanatan Dharam Sabha, SBS Nagar, Nawashahar	21000
23	Mr Avneesh Sharma (D), Dubai	20000
24.	Mr. Sudhir Gupta, Haridwar	11100
25	S.M.S.D. Inter College, Kankhal, Haridwar	11000
26	Dr Shiv Kumar, Palampur (H.P)	11000
27	Sh D.R Madan, Delhi	11000
28	Mrs Nirmala Madan, Delhi	11000
29	Dr Rakesh Kaushal, Patiala	11000
30	Dr Bharti Bandhu, Ambala Cantt	11000
31	Ms Sumedha and Mr Gaurang, New Jersey USA	11000
32	Mr Vaibhav and Ms Priyanka, Jakarta	11000
33	Mr Ribhu Kant Goswami Delhi	11000
34	Sh. S.C Gupta/Dr Prashant, Agra	11000
35	Shri Kewal Krishan Aggarwal, Ludhiana	11000
36	G G D S D College Subathu (Solan), Subathu (Solan)	11000
37	Dr Manmohan Sehgal (D) Patiala	11000
38	G.G.D Memorial Cricket Society, Delhi	11000
39	Rotarian Harish Gulati, Jammu	11000
40	G.G.D.S.D.College , Palwal	11000
41	H S D Girls School Manager & Principal, Gurdaspur	11000
42	Shri Ramesh Sharma, New Zeland	11000
43	Shri Subhash Sharma, Dawarka, Delhi	10000
44	Mrs Uma Sharma & Mr Anurag Sharma, Dharamsala	10000
45	Shri Sukhdev Chodha, Allawalpur	10000
46	Sh. I.M Goswami, Delhi	5100
47	Mr U. K Sharma, Delhi	5100
48.	Mr. Karan Sharma s/o Sh. Anand Sharma, Shimla	5100
49	Mr Ananad Sharma, Shimla	5100
50	Mr Mahesh Gupta, Chandigarh	5100
51	Asa Ram Public School, Ambala Cantt	5100
52	Mr Raj Kumar Gupta, Chandigarh	5100
53	Mr Balwant Sharma, Jalandhar	5100
54	Mr Amit Mayor, Jalandhar	5100
55	Mr Suresh Bansal, Bathinda	5100
56	Mrs Veena Chadha, Chandigarh	5100
57	Dr Ashok Nandra, Ambala Cantt	5100
58	Dr (Mrs) Santosh Dhir, Ambala Cantt	5100
59	Mr Pankaj Oberoi, Jakarta	5000
60	Mr N.M Batra, Delhi	5000
61	Bulls Eye, Knowledge System Pvt. Ltd., Chandigarh	5000
62	M/s Tree Hotel Pvt., New Delhi	5000
63	Dr Ashutosh & Dr Rama Kant, Angiras, (D)SDC Ambala Cantt	51000
64	Dr Asha Sharma, SDC Ambala Cantt.	25000
65	Mrs Shabhnam Nath, SDC Ambala Cantt.	21000
66	Dr Janak Khanna, SDC Ambala Cantt.	21000
67	Dr Janak Khanna (D), SDC Ambala Cantt.	11000
68	Dr Desh Bandhu, SDC Ambala Cantt.	11000
69	Dr Desh Bandhu, Rotary Club.	5100
70	Dr Desh Bandhu, Dry Rashan	10000
71	Dr Sunil Kumar (D) SDC Ambala Cantt.	11000
72	Dr R.S.Dhillon (D) SDC Ambala Cantt.	10000
73	Dr. Rajinder Singh, SDC Ambala Cantt.	5100
74	Dr N. K Sharma, SDC Ambala Cantt.	5100
75	Dr Rashmi Chaudhary, SDC Ambala Cantt.	5100
76	Mr Satish Chander Mehta Karnal, SDC Ambala Cantt.	5100
77	Mrs Indira Yadav, SDC Ambala Cantt.	5100
78	Dr Vijay Sharma & Mr Ravinder Sharma, SDC Ambala Cantt.	5100
79	Mrs Neelam Ahuja (D) SDC Ambala Cantt.	5000
80	Mr P.K Mathur, SDC Ambala Cantt.	4100
81	Prof P.K Seth, SDC Ambala Cantt.	3100
82	Dr Shashi Rana, SDC Ambala Cantt.	3100
83	Dr Balesh Kumar, SDC Ambala Cantt.	2100
84	Dr Chiman Lal, SDC Ambala Cantt.	2100
85	Mr Harvinder Singh, SDC Ambala Cantt.	2100
86	Mrs Manisha Narang w/o Harvinder Singh, SDC Ambala Cantt.	1100

87	Dr Renu Sharma, SDC Ambala Cantt .	2100
88	Ms Bhawana Madhok, SDC Ambala Cantt .	2100
89	Dr Sushil Kumar, SDC Ambala Cantt .	2100
90	Dr Madhu Sharma, SDC Ambala Cantt .	2100
91	Dr Jaideep Chauhan, SDC Ambala Cantt .	2100
92	Mr Sumit Chhibber, SDC Ambala Cantt .	2100
93	Dr R.C Sharma, SDC Ambala Cantt .	2100
94	Mrs Meenakshi Sharma Babyal, SDC Ambala Cantt .	2100
95	Dr Paramjeet Kaur Patiala, SDC Ambala Cantt .	2100
96	Dr Nirvair Singh, SDC Ambala Cantt .	2100
97	Dr Divya Jain Karnal, SDC Ambala Cantt .	2100
98	Dr Ashutosh Angiras, Chandigarh, SDC Ambala Cantt .	2100
99	Dr Jaipal, Kaithal, SDC Ambala Cantt .	2000
100	Prof Jagdish, SDC Ambala Cantt .	2000
101	Mr Priyanshu GS/o Sh Jagdish ji, SDC Ambala Cantt .	2000
102	Mr Satbir Singh, SDC Ambala Cantt .	1100
103	Dr Neena Malhotra, SDC Ambala Cantt .	1100
104	Shri C.R.Sharma, SDC Ambala Cantt .	2100
105	Mr Neeraj Sharma, SDC Ambala Cantt .	1100
106	Mr Sukhdev Chauhan, SDC Ambala Cantt .	1100
107	Mr Sushil Kumar, SDC Ambala Cantt .	1100
108	Mr Ramesh Chand, SDC Ambala Cantt .	1100
109	Mr Gajinder Singh, SDC Ambala Cantt .	1100
110	Mr J.P.Tiwari, SDC Ambala Cantt .	1100
111	Mr Balram Tiwari, SDC Ambala Cantt	1100
112	Mr Ravinder Kumar, SDC Ambala Cantt	1100
113	Mr Sanjeev Kumar, SDC Ambala Cantt	1100
114	Ms Komal Manocha, SDC Ambala Cantt	1100
115	Mr Ram Kumar, SDC Ambala Cantt	1000
116	Ms Meenu Bhardwaj, SDC Ambala Cantt	500
117	Ms Sushila, SDC Ambala Cantt	1100
118	Ms Aarti, SDC Ambala Cantt	1100
119	Mr Dharam Raj, SDC Ambala Cantt	1100
120	Mr Vinod Kumar, SDC Ambala Cantt	1100
121	Mrs Renu Malik, Canada	11000
122	Mrs Neelima Khandekar, Ambala Cantt	3100
123	Mrs Neelam Thukral, Ambala Cantt	2100
124	Mrs Neelinderjit Kaur Sandhu, SDV Ambala Cantt	11000
125	Mrs Anuroop Johal, SDV Ambala Cantt	5000
126	Mr Chander Vijay, SDV Ambala Cantt	2100
127	Ms Dhaneshwari (D) SDV Ambala Cantt	2100
128	Ms Dhaneshwari, SDV Ambala Cantt	2100
129	Ms Seema Gupta, SDV Ambala Cantt	2100
130	Ms Mamta Tandon, SDV Ambala Cantt	2100
131	Mr S.K.Khanna, SDV Ambala Cantt	1100
132	Mr Davinder Sharma, SDV Ambala Cantt	1100
133	Mr Arun Goel, SDV Ambala Cantt	1100
134	Mr Amit Sharma, SDV Ambala Cantt	1100
135	Mr Varun Jain, SDV Ambala Cantt	1100
136	Mr Parminder Sachdeva KRK, SDV Ambala Cantt	1100
137	Ms Priyanka Malik, SDV Ambala Cantt	1100
138	Mr Gopal Sharma, SDV Ambala Cantt	1100
139	Mr Ramesh Sharma, SDV Ambala Cantt	1100
140	Ms Deepali Anand, SDV Ambala Cantt	1100
141	Ms Jyoti Sharma, SDV Ambala Cantt	1100
142	Mr Sandeep Kumar, SDV Ambala Cantt	1100
143	Mrs. Harpreet Gujral, Ambala Cantt	1100
144	Mr Dalip Mehta, Ambala Cantt	3100
145	Sh Shiv Kumar Lomas, Dhuri	2100
146	Dr R.P.Vij, Haridwar	2100
147	Mr Vinod Saini, Haridwar	1100
148	Mr S.P Saxena, Haridwar	1100
149	M/s Begraj Singh & Associates, Haridwar	1100
150	M/s Pandey Electric Works, Haridwar	1100
151	Mr Gobind Vallabh, Haridwar	1100
152	Mr Gopal Sharma, Haridwar	1100
153	Mrs Prerna Singh, Zirakpur	500
154	Mr Arun Sharma, Delhi	2100
155	Mr C.S Goswami, Delhi	2100
156	Ms Sonia Sandhir, Sham Churasi	2100
157	Sh. Vinod Kumar Sapra, Ambala Cantt	2000
158	Mr Dinesh Dawesar, Panchkula	2000
159	Mr Rakesh Sehgal, Chandigarh	2000
160	Mrs Kavita Nath, Noida	2000
161	Mrs Reeta Devi, Baijnath (H.P)	1100
162	Dr Deepak Bhanot Delhi	1100
163	Dr Tilak Raj, Yamunanagar	1100
164	Mr Mohan Singh Babyal, Ambala Cantt	3100
165	Mrs Urvashi Issar, Delhi	2100
166	Mrs Chander Kanta Sudan, Delhi	1100
167	Lal Bahadur Shastri School, Ludhiana	1100
168	Mrs Kanta Sharma, Ludhiana	1000
169	Mr Shadi Lal Anand, Hariana	1100
170	Ms Kanya Kumari Roy Chaudhari, Noida	1100
171	Mr Jaideep Nayyar Bathinda	1100
172	Dr Vipin Kalia, Ponta Sahib	1100
173	Mr Ashish Sharma (D), Jalandhar	1000
174	Dr Ramesh Danda, Kurukshetra	1100
175	Mr Sanjeev Sharma, Karnal	3100
176	Dr R.P.Bhardwaj, Jalandhar	3100
177	Mrs Aruna Gupta, Gurugram	2100
178	Gupt Dan, Hoshiarpur	2100
179	Shri S.K Goswami, Mumbai	2100
		4243600

Although proper care has been taken while preparing the list. Omission if any is regretted.

करोना महामारी (Covid.19) के दौरान सनातन धर्म सभाओं, महाबीर दलों तथा शिक्षा संस्थाओं द्वारा दिया गया योगदान (जानकारी समाचार पत्रों के माध्यम से)

जरूरतमंदों को राशन वितरित करते सनातन धर्म सभा के पदाधिकारी • पीआरओ

जासं, अंबाला : लॉकडाउन के दौरान दो वक्त की रोटी के लिए जद्दोजहद करने वाले जरूरतमंदों के लिए सनातन धर्म सभा अंबाला ने 2 लाख 21 हजार रुपये की खाद्य वस्तुएं देकर ... बताया कि इस सहयोग राशि से आटा, चावल, चीनी, घी, तेल और मसाला व अन्य रोजाना की जरूरत वाले सामान अग्रवाल सभा अंबाला को सौंप दिया गया। प्रो. तारा चंद, एमएम सहगल, नीरू गोयल, राकेश अग्रवाल, ...

रोजाना 500 लोगों को खाना भेज रही श्री सनातन धर्म सभा

बठिंडा| संकट की घड़ी में समाज के प्रति अपने फर्ज निभाने में जुटे श्री सनातन धर्म सभा की ओर से प्रतिदिन 500 लोगों के लिए सुबह-शाम खाने के पैकेट भिजवाए जा रहे हैं। ... खाना तैयार किया जाता है। सभा के मैनेजर सुरिंदर मित्तल की अगुवाई में प्रति व्यक्ति डाइट के अनुरूप खाने के 500 पैकेट तैयार करके शहर की पिछड़ी बस्तियों, झुग्गियों तथा दिहाड़ीदार मजदूर परिवारों को ...

कोरोना से जंग : संकल्प व संयम से वायरस का करेंगे खात्मा : महंत स्वरूप

झुग्गी-झोंपड़ी वासियों को भोजन, मास्क, सैनीटाइजर बांटे

झुग्गी-झोंपड़ी में सेवा करते कार्यकर्त्ता। (वरिन्द्र)

मालेरकोटला, 23 मार्च (वरिन्द्र): राष्ट्र में हर बड़ी आपदा के समय बिना भेदभाव, जात-पात, धर्मवाद से हट कर दूसरों की मदद करना हर इंसान का पहला कर्तव्य है वहीं "नर सेवा नारायण सेवा" तहत अपनी कमाई के कुछ अंश को समाज हित में लगाने हेतु सबको तत्पर रहना चाहिए।

यह विचार श्री सनातन धर्म महावीर दल, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के ओहदेदारों ने "विश्व भर में तेजी से पैर पसार रहे कोरोना वायरस ... में रहते निवासियों को भोजन, मास्क, सैनीटाइजर निःशुल्क बांटे।

इस मौके भूपेन्द्र बुगेरजा, नरेंद्र पाल नंदा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देशवासियों ने संकल्प व संयम से वायरस के खात्मे हेतु कमर कस ली है, वहीं 'हारेगा कोरोना-जीतेगी दुनिया', 'दरवाजे के बाहर ...

युवा सेवा एसोसिएशन व सनातन धर्म महावीर दल कर रहा सेवा कार्य

यमुनानगर, 7 मई (ब्यूरो) : कोरोना महामारी के दौरान समाज की कई संस्थाओं द्वारा सेवा के अनेक कार्य करते हुए पीड़ित मानवता की सेवा में अपना योगदान दिया जा रहा है। इसी कड़ी में युवा सेवा एसोसिएशन एवं सनातन धर्म महावीर दल यमुनानगर द्वारा लगातार 500 लोगों के लिए भोजन बना कर वितरण किया जा रहा है।

दोनों संस्थाओं के सेवा कार्यों में गगन कटोच, संजय बक्शी, घनश्याम शर्मा, सतवंत सूदन, बिट्टू, रमेश, सोनू, विनय भाटिया, राकेश मखीजा, हिमांशु राजा, नमन संजीवनी, शिवचरण, राकेश मखीजा, हिमांशु राजा, कपिल सचदेव, अमन सचदेव, कुलदीप दुग्गल, मनोज शर्मा, ... बक्शी, चिराग सिपल, मयंक गर्ग व अन्य सभी सदस्यों का सहयोग मिल रहा है।

लंगर व दूध बांटा, आज जलेबियां बांटेंगे

श्री सनातन धर्म सभा व नौजवान वेलफेयर सोसायटी प्रतिदिन जरूरतमंदों की सेवा के लिए कार्य कर रही

11 हजार रुपये का सहयोग दिया

दानियों ने जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए संस्था की मदद की

श्री सनातन धर्म सभा ने 300 लोगों को बांटा खाना और जलेबी का प्रसाद

जरूरतमंदों को खाने के पैकेट व जलेबी वितरित करते सभा के सदस्य।

बठिंडा| श्री सनातन धर्म सभा की ओर से लॉकडाउन की वजह से रोजी-रोटी को मोहताज लोगों को लगातार एक महीने से लंगर बांटा जा रहा है। प्रधान सीए प्रमोद मित्तल की अध्यक्षता में वीरवार को गोल डिग्गी के समीप पानी वाली टंकी के नीचे 300 लोगों को खाने के पैकेज बांटे, वहीं साईं बाबा के विशेष दिवस पर गर्म जलेबी का प्रसाद भी बांटा गया जबकि सुबह 8 बजे दूध व बिस्कुट बांटे गए। इससे पहले मंगलवार को बालाजी को भोग लगवाकर खीर का प्रसाद खिलाया गया। पावरकाम ... प्रकाश अग्रवाल, सुरिंदर मित्तल ने लंगर-प्रसाद बांटने में सेवाएं दी। जेपी गोयल, रमेश गोयल, प्रो. ... मित्तल, अजय गोयल, पुजारी अर्जुन की अगुवाई में प्रतिदिन 300 से ज्यादा जरूरतमंद लोगों को दोपहर ...

भाईचारा सांझ मिसाल : सर्वधर्म आगुओं ने कोरोना मरीजों के भोजन का बीड़ा उठाया

मालेरकोटला, 7 मई (कपिल): शहर के सभी धर्म के एक वक्फ ने सेवा की भावना से सरकारी अस्पताल में इलाज हेतु भर्ती कोरोना मरीजों की देखभाल, भोजन, चाय, नाश्ता, दवाइयाँ आदि के प्रबंध का बीड़ा उठाकर आपसी प्यार की मिसाल पेश कर दी है।

जिसमें एस.पी. मनजीत सिंह बराड़ के सानिध्य में रोजाना क्रमवार मरीजों हेतु गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा ने हेड ग्रंथी भाई अवतार सिंह बरेमा के नेतृत्व में प्रातः चाय, ब्रेड, गुरुद्वारा हा दा मारा साहिब ने हेड ग्रंथी [illegible] सिंह, गुरमुख सिंह टोहाना के नेतृत्व में सायं-रात्रि भोजन, कूका नामधारी शहीद स्मारक ने मुख्य सेवादार गुरसेवक सिंह के नेतृत्व में दोपहर का भोजन, श्री सनातन धर्म महावीर दल ने मोहन स्वरूप बिहारी शरण के नेतृत्व में शाम को चाय, बिस्कुट, मुस्लिम भाईचारा से इमाम के मौलवी साहिब, मोहम्मद अदरीश ने खजूर, फल आदि का प्रबंध कर रहे हैं। इतना ही नहीं सभी मरीजों के जल्द ठीक होने की कामना हेतु सोशल डिस्टेंस सहित सभी आगुओं द्वारा प्रभु प्रार्थना करके प्रसाद सेवा भी की जाती है।

इस मौके एस.एम.ओ. जसविंद्र सिंह ने बताया कि डा. प्रभलीन कौर (नोडल अफसर) की निगरानी में चौबीसों घंटे मरीजों का विशेष इलाज चल रहा है वहीं सभी धर्म के लोगों द्वारा 23 मार्च से निरंतर लंगर सेवाएं मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। एस.पी. बराड़ ने कहा कि कोरोना काल में मलेरकोटला

मरीजों हेतु लंगर प्रबंध कराते मैंबर। (कपिल)

वहां में हर धर्म (हिंदू-मुस्लिम-सिख-इसाई) के लोग कंधे से कंधा मिलाकर सेवा हेतु कमर कसते हैं जो देश से हर बड़ी बीमारी का जल्द खात्मा होना तय हो जाता है। उन्होंने अपील करते कहा कि "सबका स्वास्थ्य हेतु संकल्प-संयम ही बड़े हथियार है" इसलिए घरों में रहकर सरकारी नियमों की पालना करें।

उधर, श्री सनातन धर्म महावीर दल ने मोहन स्वरूप बिहारी शरण के नेतृत्व में कोरोना मरीज बच्चों हेतु बिस्कुट, चिप्स आदि का प्रबंध करके दुख को कुछ कम करने के प्रयास किए गये हैं। इस मौके भाजपा मंडल-1 प्रधान अमन थापर, सनातन [illegible] प्रधान [illegible] जैन, [illegible] उद्योगपति [illegible] वर्मा, [illegible] हरिइंटरप्राइज एम.डी. नवनीत जैन, गौरव जैन, अग्रवाल परिवार मिलन संघ प्रधान नीरज गर्ग, अनिल गुप्ता, सचदेवा जी. आदि ने पूर्ण सहयोग किया।

ਛੱਜੂਭਟ ਮਹਾਂਵੀਰ ਦਲ ਵਲੋਂ ਕੀਤਾ ਸਫਾਈ ਸੇਵਕਾ ਦਾ ਸਨਮਾਨ

♦ ਲੋਕ ਇਸ ਬਿਮਾਰੀ ਤੋਂ ਬੱਚਣ ਲਈ ਘਰਾਂ 'ਚ, ਸਫਾਈ ਸੇਵਕਾ ਵਲੋਂ ਸਫਾਈ ਅਭਿਆਨ ਜਾਰੀ : ਛੱਜੂ ਰਾਮ ਅਰੋੜਾ, ਗੁਰਦਿਆਲ ਇੰਦਰਜੀਤ ਸਿੰਘ

ਵਰਿੰਦਰ ਵਰਮਾ • ਨਾਭਾ।

ਦੇਸ਼ ਭਰ ਵਿੱਚ ਜਿੱਥੇ ਕੋਰੋਨਾ ਵਾਇਰਸ ਬਿਮਾਰੀ ਦਿਨ ਪ੍ਰਤੀ ਦਿਨ ਪੈਰ ਪਸਾਰ ਰਹੀ ਹੈ ਉੱਥੇ ਹੀ ਕੇਂਦਰ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬਚਾਉ ਲਈ ਲਾਕਡਾਊਨ ਕਰਫਿਊ ਲਗਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਕਈ ਤਰਾਂ ਦੇ ਉਪਰਾਲੇ ਕੀਤੇ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਜ਼ਿਕਰਯੋਗ ਹੈ ਕਿ ਨਾਭਾ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿੱਚ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬਚਾਓ ਲਈ ਸਫਾਈ ਸੇਵਕਾਂ ਵਲੋਂ ਲਗਾਤਾਰ ਸਫਾਈ ਅਭਿਆਨ ਜਾਰੀ ਰੱਖਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ ਜਿਸ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹੋਏ ਛੱਜੂਭਟ ਮਹਾਂਵੀਰ ਦਲ ਨਾਭਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਛੱਜੂ ਰਾਮ ਅਰੋੜਾ, ਸਾਬਕਾ ਚੇਅਰਮੈਨ ਮਾਰਕੀਟ ਕਮੇਟੀ ਗੁਰਦਿਆਲ ਇੰਦਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ 'ਚ ਹੀ ਕਲਾਸ

ਫੋਟੋ • ਸ਼ੇਕ ਪੋਸਟ

ਸਨਮਾਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਪ੍ਰਧਾਨ ਛੱਜੂ ਰਾਮ ਅਰੋੜਾ ਅਤੇ ਸਾਬਕਾ ਚੇਅਰਮੈਨ ਗੁਰਦਿਆਲ ਇੰਦਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਚਿੱਲੂ ਨੇ ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲਬਾਤ ਕਰਦੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਿੱਥੇ ਲੋਕ ਇਸ ਬਿਮਾਰੀ ਤੋਂ ਬੱਚਣ ਲਈ ਆਪਣੇ ਘਰਾਂ ਵਿੱਚ ਹਨ ਉੱਥੇ ਇਹ ਸਫਾਈ ਸੇਵਕ ਇਸ ਭਿਆਨਕ ਬਿਮਾਰੀ ਦੀ ਬਿਨਾਂ ਪਰਵਾਹ ਕੀਤੇ ਮੁੱਹਲਾ, ਕਲੋਨੀਆਂ ਅਤੇ ਬਜ਼ਾਰਾਂ

ਛੱਜੂਭਟ ਮਹਾਂਵੀਰ ਦਲ ਦੇ ਸਮੂਹ ਮੈਂਬਰਾਂ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਐਸ.ਡੀ.ਐਮ ਸੂਬਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਦਿਸ਼ਾ ਨਿਰਦੇਸ਼ਾ ਤਹਿਤ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਬਚਾਓ ਲਈ ਸਫਾਈ ਅਭਿਆਨ ਜਾਰੀ ਰੱਖਿਆ ਗਿਆ, ਸਾਡਾ ਸਾਰਿਆਂ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਬਣਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਬਿਮਾਰੀ ਤੋਂ ਬੱਚਣ ਲਈ ਸਫਾਈ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰੱਖਿਏ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਘਰਾਂ

गीता भवन मंदिर ने 60 परिवारों को राशन बांटा

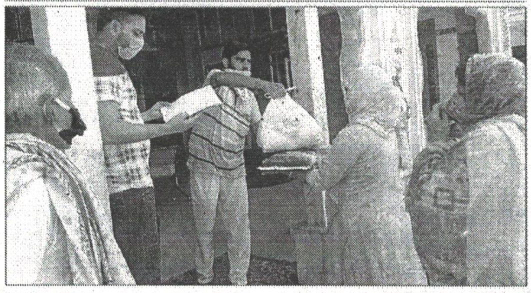

दोरांगला (नंदा): गीता भवन मंदिर गुरदासपुर में कोरोना महामारी के संकट के कारण आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे 60 परिवारों को 14-14 दिन का राशन गीता भवन स्कूल की प्रिंसिपल सीमा

तीन स्कूलों के 107 स्टाफ ने विधायक को सौंपे चेक

जागरण संवाददाता, अंबाला शहर श्रीजीआरएसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मॉडल स्कूल और एसडी पब्लिक स्कूल के 107 स्टाफ सदस्यों ने स्वेच्छा से प्रधानमंत्री रिलीफ फंड में योगदान दिया। स्कूल के मैनेजर विनोद गर्ग ने बताया कि उनकी संस्था के तीन स्कूल हैं। जिनमें स्कूल के स्टाफ के 60 सदस्य, मॉडल स्कूल के 36 सदस्य और एसडी पब्लिक स्कूल के 11 सदस्यों ने सहायता दी। उन्होंने बताया कि कोई भी चेक ढाई सौ रुपये से कम राशि का नहीं है। प्रबंधक समिति की प्रेरणा से स्कूल स्टाफ ने प्रधानमंत्री रिलीफ फंड के चेक नगर सेवक असीम गोयल को सौंपे गए। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधक समिति के अरविन्द अग्रवाल उपप्रधान, रितेश गोयल सचिव, विनोद गर्ग मैनेजर, मदन लाल अग्रवाल, नरेश अग्रवाल, सुरेश बंसल कैशियर, विरेन्द्र अग्रवाल प्रबन्धक जीआरएसडी मॉडल स्कूल, नरेश बंसल सभा उपाध्यक्ष उपस्थित रहे।

जीआरएसडी सीनियर सेकेंडरी स्कूल और एसडी पब्लिक स्कूल के स्टाफ सदस्यों द्वारा पीएम रिलीफ फंड में देने के लिए विधायक असीम गोयल को चेक सौंपा गया। • जागरण

ठिंडा में श्री सनातन धर्म सभा की तरफ से प्रधान प्रमोद मित्तल की अगुआई में रोजाना रूरतमंद लोगों को लंगर बांटा जा रहा है। शुक्रवार को भी लोगों को लंगर बांटते हुए मेश गोयल, प्रकाश अग्रवाल, प्रो. पवन गुप्ता, सुरेंद्र मित्तल। • जागरण

सनातन धर्म पंजाब महाबीर दल ने 200 परिवारों को बांटा राशन

छेहरटा, 5 अप्रैल (जगजीत): दैनिक सवेरा टाइम्स के मुख्य संपादक श्री शीतल विज की ओर से शुरू की गई मुहिम के तहत जी.टी. रोड पर स्थित हनुमान मंदिर छेहरटा में श्री सनातन धर्म पंजाब महाबीर दल मंदिर के प्रधान दविंदर सिंह भनोट की अध्यक्षता व छेहरटा चौकी इंचार्ज सब इंस्पेक्टर भूपिंदर सिंह की निगरानी में 200 परिवारों में राशन सामग्री बांटी गई। सब इंस्पेक्टर भूपिंदर सिंह ने कुछ लोगों को मंदिर परिवारों को घर घर जाकर बड़ी सावधानी व सोशल डिस्टेंस का ख्याल रख कर राशन दिया। मंदिर के प्रधान दविंदर भनोट ने दैनिक सवेरा के मुख्य संपादक श्री सीतल विज का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनकी फाउंडेशन और उनके रिपोर्टिंग टीम लगातार जरूरतमंदों की सहायता कर रही है। यह बहुत ही बढ़िया कदम है। इस मौके पवन कुमार, नरिंदर कुमार, पलविंदर कुमार, परदीप कुमार, प्रेम कुमार, राज कुमार, सुभाष

10 जून 2020 को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की 61वीं पुण्यतिथि पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई

Sanatan Dharma College Ambala Cantt paid Homage to Tyagmurti Goswami Ganesh Dutt Ji Maharaj

Today 10th June 2020

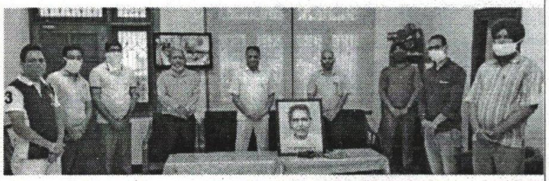

Great educationist, tyagmurti Goswami Ganesh Dutt Ji Maharaj was remembered on his 6 death anniversary today at Sanatan Dharma College, Ambala Cantt. Principal Dr. Rajinder Sin along-with staff members of the college paid floral tributes on the occasion.

While paying glowing tribute to Goswami Ganesh Dutt ji Dr. Rajinder Singh said that he was renowned educationist and propagator of Sanatan Dharma. He did a lot to improve educati and health services in several states of the country, particularly in northern India in pre and p independent era. It is due to his tireless efforts Sanatan Dharma College, Lahore w rehabilitated and reestablished at Ambala Cantt after partition of the country. His values education are still relevant and they indeed are benchmarks for the present generation.

Dr. Balesh Kumar Librarian of the college said that Goswami Ganesh Dutt was a disciple of Bhar Ratna Pandit Madan Mohan Malviya ji and the lone disciple who was given the mantra diksha Malviya ji himself. He dedicated his whole life to the cause of service to humanity and revival Sanatan Dharma in the country and abroad. His contribution in spread of education and religic values in the society in the colonial days is remarkable.

हरियाना कॉलेज में गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की 61वीं बरसी मनाई

गोस्वामी गणेश दत्त महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित करते प्रिंसिपल गुरदीप कुमार शर्मा व स्टाफ सदस्य। -भास्कर

होशियारपुर| जीजीडीएसडी कॉलेज हरियाना में कॉलेज प्रिंसिपल गुरदीप कुमार शर्मा की अध्यक्षता में गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की 61वीं बरसी मनाई गई। इस दौरान सोशल डिस्टेंस बनाकर व अन्य सुरक्षा नियमों की पालना करते हुए त्याग मूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त महाराज को फूल भेंट कर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल डॉ. जसपाल सिंह, डॉ. राजीव कुमार, डा. फूला रानी, प्रो. एकता शर्मा, प्रो. गुरप्रीत कौर, डॉ. हरविंदर कौर पंजाबी, राकेश जरियाल, निर्मल सिंह, सुरिंदर कुमार और लवदीप सरोआ मौजूद रहे।

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की 61वीं पुण्यतिथि मनाई

गुरदासपुर/दोरांगलां (हरमन, नंदा): स्थानीय एच.एस.डी. कन्या सीनियर सैकेंडरी गीता भवन में त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की 61वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। समारोह का शुभारंभ हवन यज्ञ से किया गया जिसके उपरांत उनकी मूर्ति समक्ष ज्योति प्रज्जवलित करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर स्कूल प्रिंसिपल श्रीमति सीमा वासुदेव सहित समूह स्टाफ भी उपस्थित था।

गोस्वामी गणेश दत्त की 61वीं पुण्यतिथि मनाई

गोस्वामी गणेश दत्त जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित करते प्रिं. डा. गुरदीप शर्मा व अन्य। (आनंद)

हरियाना, 10 जून (आनंद): श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कालेज हरियाना में प्रि. डा. गुरदीप कुमार शर्मा के नेतृत्व में सभा के संस्थापक ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की 61वीं पुण्यतिथि मनाई गई। इस मौके वाईस प्रि. जसपाल सिंह, डा. राजीव कुमार, डा. फूला रानी, प्रो. एकता शर्मा, प्रो. गुरप्रीत कौर, डा. हरविन्द्र कौर, राकेश जरियाल, इन्द्रजीत सिंह, निर्मल सिंह, सुरिन्द्र कुमार लवदीप सरोआ आदि भी हाजिर थे।

गणेश दत्त गोस्वामी को किया याद

हरिद्वार। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संस्थापक और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की 61वीं पुण्यतिथि माया देवी मंदिर परिसर के पास स्थित गीता भवन में लॉकडाउन के नियमों का पालन करते हुए मनाई गई। इस दौरान समाजसेवी सुभाष घई ने कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त महाराज का समाजसेवा और शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्य को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि देशभर में उनकी ओर से स्थापित की गई संस्थाएं आज उनके विचारों और जीवन आदर्शों की पताका फैला रही हैं। विशिष्ट अतिथि गोपाल दत्त शर्मा ने कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त महाराज विचारों के ऐसे पुंज थे जिनकी आभा हमेशा पूरी दुनिया को प्रकाशमान करती रहेगी। इस अवसर पर गीता भवन के प्रबंधक गोविंद वल्लभ, चंद्रप्रकाश, अवनीश शास्त्री, विनोद शर्मा, पूर्णचंद्र, भरत दास, देवेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

पुण्यतिथि पर गोस्वामी गणेश दत्त को अर्पित की श्रद्धांजलि

श्रद्धासुमन अर्पित करते स्कूल स्टाफ मेंबर।

एचएसडी कन्या सीसे स्कूल गीता भवन में कार्यक्रम का आयोजन

गुरदासपुर| स्थानीय एचएसडी कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल गीता भवन में गोस्वामी गणेश दत्त महाराज की 61वीं पुण्यतिथि मनाई गई। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली के संयोजक रहे इन विभूति को श्रद्धासुमन अर्पि किए। समारोह का शुभारंभ हव यज्ञ के साथ हुआ। इसके उपरां गोवास्वामी गणेश दत्त के चि समक्ष पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि र गई। इस मौके पर प्रिंसिपल सीम वासुदेव के अलावा स्टाफ मेंब मौजूद थे।

डा. गुरदीप शर्मा प्राचार्या गोस्वामी गणेशदत्त महाविद्यालय हरियाना 38 साल के कार्यकाल बाद हुए सेवानिवृत्त, भावभिनि विदाई

सेवा मुक्ति पर प्रि. डा. गुरदीप शर्मा विभिन्न संस्थाओं की ओर से सम्मानित

प्रिं. डा. गुरदीप कुमार शर्मा ने अपने पिता स्व: राज कुमार शर्मा की स्मृति में कालेज के गरीब विद्यार्थियों की सहायतार्थ कालेज को एक लाख रुपए की प्रदान की एफ. डी.

प्रिं. डा. गुरदीप कुमार शर्मा को सम्मानित किए जाने का दृश्य।

हरियाना (मुकेरियां टाइम्स): सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार जी. जी. डी. एस.डी. कालेज हरियाना के प्रिंसीपल तथा एस. डी. एजुकेशन बोर्ड के महासचिव प्रि. डा. गुरदीप कुमार शर्मा की साढ़े 38 वर्षीय शानदार सेवाओं के उपरांत सेवा निवृती पर शानदार समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके कोविड-19 के चलते सभी सावधानियों का पालन करते हुए सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, कालेज स्टाफ, विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपलों व समाज सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों की ओर से प्रि. डा. गुरदीप शर्मा को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए एस. डी. ...

गुरदीप शर्मा के प्रति अभिनन्दन प्रकट करते व बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अपनी शानदार सेवाओं दौरान उच्च स्तरीय शिक्षा के क्षेत्र, प्रशासनिक व अन्य क्षेत्रों में हर कार्य को सफलता पूर्वक अंजाम देकर अपनी विलक्षण प्रतिभा व व्यक्तित्व की अनोखी मिसाल कायम की। ऐसे व्यक्ति हमारे व समाज के लिए प्रेरणा स्रोत व ...

गरीब विद्यार्थियों की सहायतार्थ कालेज को एक लाख रुपए की एफ. डी. प्रदान करते हुए समूह उपस्थिति के प्रति दिए गए मान सम्मान के प्रति आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व वाईस प्रिं. डा. जसपाल सिंह ने मंच संचालन करते हुए प्रिं. डा. गुरदीप शर्मा ने साढ़े 18 साल बतौर लैक्चरार जबकि 20 वर्ष प्रिंसीपल के पद पर रहते हुए ...

की काया ही कल्प कर दी। इसी प्रकार पंजाब विश्व विद्यालय चंडीगढ़ की सैनेट में चार बार तथा सात बार सिंडिक मैंबर तथा महत्वपूर्ण कमेटियों के चेयरमैन तथा मैंबर रहे। इसके अतिरिक्त सभा के विभिन्न पदों पर शानदार सेवाओं को अंजाम दे रहे है। इस अवसर पर कालेज कमेटी मैंबर अशोक शर्मा, प्रिं. डा. निशा भार्गव एम. पी. एम. डी. ए. वी. कालेज चंडीगढ़, मुनीष शर्मा डी. एस. पी. होशियारपुर, जागृति शर्मा, राजन मैणी, अमित मैणी, तन्वी शर्मा, पुरुषार्थ महाजन, अक्षत शर्मा डा. जसपाल झुसह, डा. राजीव कुमार, डा. जसवंत झुसह, प्रो. सुरेश कुमार,डा. कर्ण उप्पल, प्रिं. शादी लाल आनंद, नरेश कौशल, मुकेश शर्मा, राकेश अरियाल, प्रो. कौशल, डा. संधर, डा. हरविन्द्र कौर, डा. ...

सेवा मुक्ति पर प्रि. डा. गुरदीप शर्मा को संस्थाओं ने किया सम्मानित

हरियाना, 4 जुलाई (रोहित): सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार जी. जी. डी. एस.डी. कालेज हरियाना के प्रिंसीपल तथा एस. डी. एजुकेशन बोंड के महासचिव प्रि. डा. गुरदीप कुमार शर्मा की साढ़े 38 वर्षीय शानदार सेवाओं के उपरांत सेवा निवृती पर शानदार समारोह का आयोजन किया गया। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, ...

गरीब विद्यार्थियों की सहायतार्थ कालेज को प्रदान की 1 लाख रुपए की एफ.डी.

हरियाना : श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार जी.जी.डी. एस.डी. कालेज हरियाना के प्रिंसीपल व एस.डी. एजुकेशन बोर्ड के महासचिव प्रिं. डा. गुरदीप कुमार शर्मा के सम्मान हेतु समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके प्रिं. डा. गुरदीप शर्मा ने अपने पिता स्व. राज कुमार की स्मृति में कालेज के गरीब विद्यार्थियों की सहायतार्थ कालेज को 1 ...

हरियाना में जीजी डीएसडी कॉलेज के प्रिंसीपल तथा एसडी एजुकेशन बोर्ड के महासचिव प्रि. डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा की सेवानिवृति पर स्मृति चिन्ह देते हुए अशोक शर्मा, प्रि. डॉ. निशा भार्गव एमपी एमडी, एवी कॉलेज चंडीगढ़ व डीएसपी मुनीष शर्मा • जागरण

संस्था ने सेवानिवृत्ति के बाद डॉ. गुरदीप को दिया स्मृति चिन्ह

संस, हरियाना: सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार जीजी डीएसडी कॉलेज हरियाना के प्रिंसीपल तथा एसडी एजुकेशन बोर्ड के महासचिव प्रिंसिपल. डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा की साढ़े 38 वर्षीय शानदार सेवाओं के उपरांत सेवा निवृति पर शानदार समारोह का आयोजन किया गया।

इस दौरान सभी सावधानियों का पालन करते हुए सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, कालेज स्टाफ, विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसिपलों व समाजसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने गुरदीप शर्मा को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए एसडी एजुकेशन बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष तथा सभा के महासचिव प्रिंसिपल. डॉ. देश बंधु शर्मा ने गुरदीप शर्मा के प्रति अभिनंदन प्रकट करते हुए उन्हें बधाई दी। इस अवसर पर कॉलेज कमेटी मेंबर अशोक शर्मा, प्रि. डॉ. निशा भार्गव एमपी एमडी, एवी कालेज चंडीगढ़, मुनीष शर्मा डीएसपी होशियारपुर, जागृति शर्मा, राजन मैणी उपस्थित थे।

ਇਕ ਲੱਖ ਰੁਪਏ ਦੀ ਐੱਫਡੀ ਕੀਤੀ ਪ੍ਰਦਾਨ

ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਨੂੰ ਸਨਮਾਨਿਤ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਡਾ. ਦੇਸ਼ ਬੰਧੂ ਸ਼ਰਮਾ ਤੇ ਹੋਰ।

सनातन धर्म शिक्षा समिति के क्षेत्रीय कार्यालय का हरियाना (होशियारपुर) में उद्घाटन

Mukerian Times | मुख्य संपादक : राजेश रतू | Mob. : 8699897070 • 88473-57029 • 9256205452 | Email : mukeriantimes@gmail.com

सनातन धर्म एजुकेशन बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय का डा. देश बंधु ने किया उद्घाटन

हरियाना (मुकेरियां टाइम्स) उत्तरी भारत की प्रसिद्ध श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार श्री सनातन धर्म एजुकेशन बोर्ड के नव निर्मित क्षेत्रीय कार्यालय का विधिवत उद्घाटन सभा के कार्यकारी अध्यक्ष प्रिं. डा. देश बंधु शर्मा ने रिबिन काटकर किया। कार्यालय जी. जी. डी. एस.डी. स्कूल ...

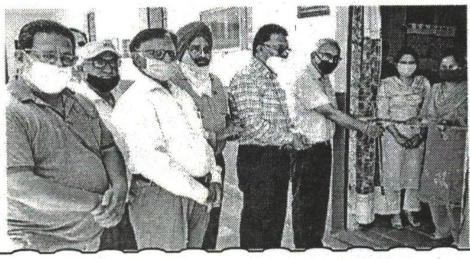

एस. पी. होशियारपुर, डा. राजीव शर्मा, डा. जसवंत सिंह, राकेश जरियाल, तन्वी शर्मा, पुरुषार्थ महाजन, प्रैस सचिव प्रिं. शादी लाल आनंद, डा. शुचि शर्मा, मुकेश कुमार तथा कई अन्य विशेष तौर पर शामिल हुए। इस मौके प्रिं. डा. देश बंधु शर्मा ने कहा कि सनातन धर्म की ओर से संचालित शिक्षण संस्थाओं के साथ साथ सनातन धर्म के प्रचार व प्रसार के ...

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति पंजाबके अन्तर्गत स्कूलों की विभिन्न मुद्दों को लेकर बैठक आयोजित

स्कूलों के बजट हुए पारित

रियाना (मुकेरियां टाइम्स न्यूज) : श्री सनातन धर्म शिक्षासमिति के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा निर्देशानुसार कार्यकारी अध्यक्ष डा. देश बंधु शर्मा कीअध्यक्षता में हरियाना कालेज में समिति के अर्न्तगत विभिन्न स्कूलों की व्यापक बैठकमें विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।

समिति के महासचिव डा. गुरदीपशर्मा तथा अशोक शर्मा विशेष तौर पर शामिल हुए। बैठक में कोविड- ...

स्वीकृति प्रदान करनेके साथ साथ पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर संतुष्टी का इजहार किया।

प्रिंसीपलोंको स्कूलों की कारगुजारी में समय के अनुरूप व्यापक स्तर पर और अधिकगुणात्मक सुधार लाने के निर्देश दिए गए।

अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा ने अपनेसंदेश में कहा कि शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियों को समय के अनुरूप ढालनेके साथ साथ उनमें सच्चरित्र, नैतिकता एव ...

स्कूलों के विभिन्न मुद्दों को लेकर बैठक आयोजित

हरियाना, 7 जुलाई (आनंद): श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा के दिशा-निर्देशानुसार कार्यकारी अध्यक्ष डा. देश बंधु शर्मा की अध्यक्षता में हरियाना कालेज में समिति के अंतर्गत विभिन्न स्कूलों की वार्षिक बैठक में विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।

विभिन्न स्कूलों की हुई बैठक दौरान कार्यकारी अध्यक्ष प्रिं. डा. देश बंधु शर्मा, स्कूलों के प्रिंसीपल व अन्य। (आनंद)

समिति के महासचिव डा. गुरदीप शर्मा तथा अशोक शर्मा विशेष तौर पर शामिल हुए। बैठक में कोविड-19 को लेकर सभी सावधानियों का पालन किया गया। बैठक में विभिन्न स्कूलों के वार्षिक बजट के आय-व्यय, अध्यापकों के परीक्षा परिणामों, शिक्षा में और अधिक गुणवत्ता लाने तथा भविष्य की योजनाओं की पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा की।

डा. देश बंधु शर्मा तथा महासचिव डा. गुरदीप शर्मा ने क्रमवार प्रिंसीपलों की ओर से स्कूलों के पेश किए गए वार्षिक बजट को स्वीकृति प्रदान करने के साथ-साथ पेश की गई प्रगति रिपोर्ट पर संतुष्टी का इजहार किया।

प्रिंसीपलों को स्कूलों की कारगुजारी में समय के अनुरूप व्यापक स्तर पर और अधिक गुणात्मक सुधार लाने के सख्त निर्देश दिए गए। इस अवसर पर डा. राजीव शर्मा, प्रिं सोनिया संधीर एस. डी. स्कूल शामचौरासी, बसी दौलत खां स्कूल के प्रिं. अनिल हांडा, जालंधर के एस.डी. स्कूल फुल्लरवान की प्रिं नीरज सैनी, एस.डी. प्ले वे स्कूल हरियाना की प्रभारी पूनम चावला, एस.डी. पब्लिक स्कूल हरियाना की प्रभारी मैडम शुचि शर्मा आदि उपस्थित थे।

ਖੇਤਰੀ ਦਫ਼ਤਰ ਦਾ ਉਦਘਾਟਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਾਰਜਕਾਰੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਪ੍ਰਿੰ. ਡਾ. ਦੇਸ਼ ਬੰਧੂ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰਿੰ. ਡਾ. ਗੁਰਦੀਪ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਤੇ ਹੋਰ।

ਦਫ਼ਤਰ ਦਾ ਡਾ. ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਕੀਤਾ ਉਦਘਾਟਨ

ਭਾਰਤ ਭੂਸ਼ਨ ਸ਼ਰਮਾ, ਹਰਿਆਣਾ

ਉੱਤਰੀ ਭਾਰਤ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਸੰਸਥਾ ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ, ...

ਕੰਮਾਂ ਕਾਰਾਂ ਦਾ ਸਮੇਂ-ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਨਿਰੀਖਣ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਕਮੇਟੀ ਮੈਂਬਰ ...

श्री सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार की गौ-शाला का सदस्यता प्रपत्र

मैं .... श्री सत्पऋषि आश्रम हरिद्वार की गौ-शाला का .... रुपये का आजीवन / वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूँ। इसके लिए नकद/चैक/ड्राफ्ट नं .... श्री सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम भेज रहा हूँ।

नाम: ....

पताः ....

....

दूरभाष नं. .... ई-मेल ....

1. आजीवन सदस्य : रु 11000/-

   वार्षिक सदस्य : (क): रु 3100/-, (ख): रु 2100/-, (ग): रु 1100/-

नोट : दान राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

Sapat Rishi Ashram Gaushala, Haridwar

Bank Name: Punjab National Bank, Shanti Kunj, Haridwar

A/c No. 4694000100047524 **IFSC Code:** PUNB0469400

....

"सनातन संवर्धिनी" - सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

दूरभाष नं. .... ई-मेल ....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी०) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/- रु. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद / चैक / ड्राफ्ट द्वारा श्री सनानत धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) अम्बाला छावनी के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही हूँ।

Sanatan Dharma Education Board

Bank Name: Central Bank of India, S.D. College Branch, Ambala Cantt

A/c No. 1852019141 **IFSC Code:** CBIN0282322

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

याद किए गए त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्तजी महाराज
10 जून 2020

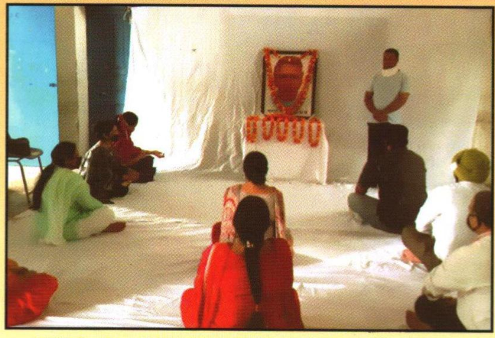

LSD Sr Sec School Bassi Daulat Khan (Hoshiarpur)

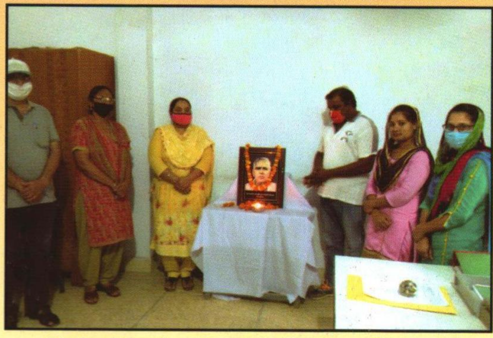

SD Co. Edu. Sen. Sec. School, Sham Chaurasi

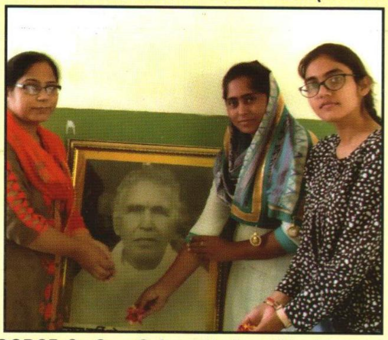

GGDSD Sr. Sec. School Hariana (Hoshiarpur)

Shri Sanatan Dharma Mahabir Dal, Yamunanagar

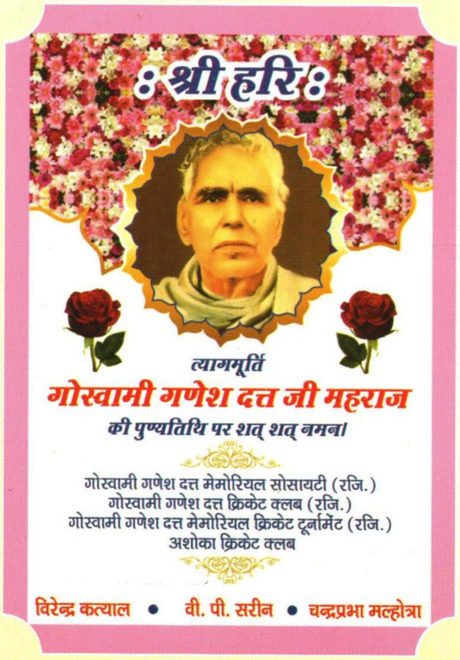

तपस्वी,योगी,त्याग की मूर्ति
थे हमारे गोस्वामी जी,
जिन्होंने अथक कार्यो से
बदल दी दुनिया शिक्षा की।
मालवीय जी से दीक्षा लेकर
सनातन धर्म की डोर संभाली
स्कूल कालेज आश्रम बनाकर
सारी धरती स्वर्ग बना दी
छूतछात का भेद मिटा कर
शिक्षा सबके लिए बना दी
गांधी जी के रस्ते चलकर
दुनिया को नई दिशा दिखा दी
जूना अखाड़ा और संस्थाओं की
देश बंधु जी ने सभा बुलाई
उनकी अगवानी में सबने
स्वामी जी की पुण्यतिथि मनाई
भागवत पाठ का आयोजन करके
नृत्य संगीत की प्रतियोगिता करवाई
दी श्रद्धांजलि मिल कर सबने
उनकी याद ताज़ा हो आई
चलेंगे मिलकर उसी रास्त पर
जो दिशा स्वामी जी ने दिखाई
करते हैं दुआ मिलकर सारे
पुण्यतिथि जाए सदा यूं ही मनाई

Tribute by: **Anita Misra,** C.L.K. S.D. Playway School Hariana

करोना महामारी के दौरान भिन्न-भिन्न स्थानों पर सनातन धर्मी संस्थाओं ने करोना योद्धाओं के रुप में आमजन की सेवा की (चित्रों और समाचार पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत संक्षिप्त रिपोर्ट)

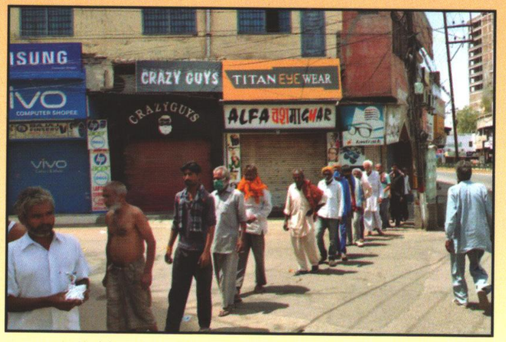

श्री सनातन धर्म सभा बठिंडा द्वारा लगभग 2 महीने लंगर सेवा की गई

गोस्वामी गणेशदत्त भवन तथा पंचमुखी हनुमान मन्दिर सेक्टर 19-ए, चण्डीगढ़ में जन सेवा हेतु कार्य

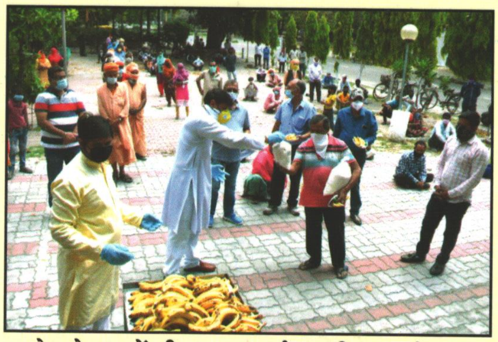

मलेरकोटला में श्री सनातन धर्म महाबीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण जी की देख-रेख में सेवा कार्य

हरिद्वार सप्तऋषि आश्रम मुख्य द्वार पर जन सेवा का दृश्य